

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ पदलिख्यते ॥ रागने
रूतालचौतालौ ॥ उमहौगनपतदेहोबुधद
ताधरैसीसगजउंम ॥ सिद्धश्रीनांवतिहा
रोधरीयै जितहीविद्याधरसपतहीपनवष
म ॥ १ ॥ संसक्ततुररिंध्रसिधालीयैचंदन
लेपाकीयैजुजमंम ॥ तानसेनप्रक्तउमही
कोंध्रावतकाहास्रकहापिमं ॥ २ ॥ रौगने
रू ॥ मोसोंजोअवधबदगयेसांरुकीपियअ
येनारनये ॥ ऐसीकोनचउरनारजिनउम
विरमायेऐसीस्रषदये ॥ १ ॥ अधरनअंजन
पीकलीकलागेनुरनयचैननये ॥ धोंधीकेष
नुउमबौहोनायककीनेनेहनये ॥ २ ॥ दैयोदि
षोसषिहोअषियनस्रषदेतहोऊजनां ॥ बिष्टु
रीअलकपीकपलकषंरुतअधरमंमतगंम
सिथलगउरसांवरेतनां ॥ १ ॥ नवलनऊंज
ऊसमउंजरचतसेजमैनहैरुकलितहो
ऊअंगअमजलकनां ॥ २ ॥ अरनचक
तनैनचाहतविनकवलनततालातताला ॥ प
हतबासहासीजनां ॥ १ ॥ ललितत्रिजंगीवि
लो ॥ २ ॥ इनसोतनकैमाईरी ॥ कहिधोऊ
ऊदेखननपाऊ ॥ विसगरी ॥ सिषयेइनहकहांके ॥
हैरीअरीरुतौकबकुकब ॥ विहारी ॥ पियप्रांनन
ऊं ॥ १ ॥ निरौधरधरधरौकर

ककीईकनचलाऊ॥ राजारामकेअगैब
 दन्वरीसगरंगकररिऊऊ॥२॥॥ ताल
 इकतालो॥ बनबनवारीहोषेवतमोलत
 गायनकेसंगधोरीधुमरकारीकाजरति
 नकोनांमलेलेरगरंग॥॥मिरोपियाचदसो
 उजियारो॥ घरीघरीपलठिनकलनपरतहे
 नेकनकीज मारो॥२॥५॥ रागनेरुताल
 असवारी॥ माखुडाजीमहांनेआवेढेहोनीदमा
 खुडाजीमहांनेआवेढे॥ म्हेतोथांरीदासीस्याबाज
 नमजनमरी॥ पोढडीनेआणजगावेढे॥६॥ राग
 नेरुतालअसवारी॥ नीकीलागेढेमहांनेआंन
 होसांवलाजीथांरीनीकीलागेढेमहांनेआंन॥
 कबकीमेठाढीठाढीअरजकरांवां॥ तनधनक
 रांऊरबांन॥७॥ रागविन्नासतालडुतालो॥
 गहिमनसवरसकोरससार॥ लोकनेदकुलव
 महीतजीये॥ चजीयेनितबिहार॥१॥ यहकाम
 चिन्पति॥ ज्योसिवोस्पांमउदार॥ कहै
 कुमन॥ रांमनांमउरधार॥२॥
 उतितालो॥ बागोगरबई
 अंगनां॥ तारनकीजोतबुटी
 ॥ मुखकीतंबोलफीकीनैनका
 रागविन्नासतालडुतालो॥
 उलठवैवे॥ असपरसहकर

तसिंगार॥ नन पदरीवाकी मोत नमा ला॥ नन प
हस्योवाको नवसरहार॥ १॥ लटपट पेच सवारन
स्यांमा॥ अलक सवारन नंदकुमार॥ जेश्रानव
जुगलवाकी जोरी॥ मेरैरी आंगन करत बिहार
॥ २॥ १०॥ राग विनास ताल डुता लौ॥ दीली दीली
मग नरौ दीली पागट करही॥ फहेसे परत ऐसी
कोन पर फहेहौ॥ गढेजौ हीयाके पिय ऐसी गाढ
कांन बिया॥ गढेगढे नो जनसों गढे कर गहेहौ
॥ १॥ लाल लोयन उनीदिलाग लागजाता सांची
कहोरस कप्यारे मैतौ लाल लहेहौ॥ रस वरसात
अलसात सगुच गात आए घात कहौ वातरात
कहं रहैहौ॥ २॥ ११॥ राग विनास ताल डुता लौ॥
कंचुकी कस तरक तरक डुटत दिषत मदन मो
हन घन स्यांमा॥ मिसा कहा डुराव करतहौ॥ उमगत
उरज डुरत केयां आंमा॥ १॥ बदन कवन पर अल
कावल मांनो॥ वजन मधुपलित विश्यांमा॥ कदम
दास प्रभु गिरधर नागराया हीनांत लजावत
कांमा॥ २॥ १२॥ राग ललित ताल तिता लौ॥ प्य
री तेरे नैनारी अति बांके॥ डेर॥ ललित त्रि नंगी वि
हारी नागराति अपने कर आंके॥ १॥ कहि धौक
वरि किशोरी को कगुन॥ सिषये इत हक हांके॥
श्रीविल विडल वितोद विहारी॥ पिय प्रांन न
मैं हांके॥ २॥ १३॥ राग ललित ताल तिता लौ॥

फकरौ माहाराज ॥ ११२८ ॥ राग ललित ताल त्रि
तालौ ॥ प्यारी जी म्हां सुख सर ह्यावौ ॥ किण काज
॥ ॥ ॥ ॥ अमलानाराता माता म्हां रै म्हे लो आय
॥ सुफल नयौ सब काज ॥ १॥ १२९ ॥ राग देवग
धार ताल अमौ चौता लौ ॥ तन कउमचित
वो मेरी और ॥ ॥ ॥ ॥ हम चित वत उम चित वत
कं हो करम की धोर ॥ १॥ मैं पिया जी कूं यौ व
सि करि कूं ॥ अंगु मिय नव सि मोर ॥ अनंद ध
न पिया निस दिन चित वत ॥ चित वत हो शग
थि नो रै ॥ २० ॥ राग देवगंधार ताल अमौ चौता
लौ ॥ दिवो दन लोग न ही की बां नी ॥ ॥ ॥ ॥ मुत न
ही हरि चरन न कू ॥ मिथ्या जनम गुमां नी ॥ १॥ ज
व जम दूत आयि घेरन कू ॥ करत आप मन मां
नी ॥ कहै श्री हरि दास सम मति मना ॥ निस दिन य
ह गुन गावनी ॥ २॥ २१ ॥ राग देवगंधार ताल अ
मौ चौता लौ ॥ तिरौ मघ जो वत ताल विहारी ॥
॥ ॥ ॥ तिरौ समाज अज हिन बूटत ॥ चाहत नां
हि हारि ॥ १॥ औचक आय हो ऊकर सें मुख ॥
सेन न देत विहारी ॥ श्री हरि दास के स्वामी स
मा ॥ ऊंज विहारी की लेत नों बावर न्वारी ॥ २॥
२२ ॥ राग पटताल चल त लौ ॥ कृतौ थां पर ऊ
री क्वारी क्वारी हो विहारी जी ॥ मृदु मुसकन
पर ऊई बलिहारी जी ॥ ॥ ॥ लाज न

रीलैरांलागीबाला॥थिकांईनरधारीहोविहारीजी
॥१॥ औरतरेम तजांपोहो विहारीजी॥लाषांवा
तांप्यारीहोसांधारीहो गिरधारीजी॥बुजनिध
अरजसफो जीहमारी॥उममोहनहम
प्यारीहोविहारीजी॥२॥२३॥रागषट तालचल
ततितालो॥वांकीहीनोहनपधीयांवांकी॥वां
केचितवननैनांवांके॥टेरा॥मैतहानेननिसे
नदईनुना॥नटनसधीकृतां करीहांकी॥१॥ नर
पिकंपिवचिजोरुनिकसी॥वाटगहीवरसांता
यांकी॥हरिप्रसादप्रभुबेललघरकी॥
काविधप्रातरहैगीटांकी॥२॥२४॥रागवि
लाउलतालइकतालो॥दियोमाईकवरवमो
दसरथको॥टेरा॥नरकसीपाघजरावतिलांगी॥
जांमोवमोजरकसको॥१॥ नरमोतनकीमा
लमतोहरा॥हाथफूलनरगसको॥जनउल
डीकैएहीमनमांमो॥मुखमोस्योमनमथको
॥२॥२५॥रागविलाउलतालइकतालो॥कां
नतेरीमुरलीनैकवजाऊ॥हेराजोहीजोहीतांन
सूनूतेरैमुखकी॥सोहीसोहीगायसुनाऊ
॥१॥ यहैसुखसनकादिककोंडरलन॥विष्णु
पारनपांऊ॥सुरदासप्रभुतिहारीकृपाते॥नि
रखनैनसुखपाऊ॥२॥२६॥रागविलाउलता
लचलततिलालो॥हिमेंमायांनबंसीवाला

मोरपषांदा मुकट सोहंदा। गरगुंजुं दीमात्ना॥१॥
 विधुरी अलक सुलफ गुधरा री। जरदुपदा
 वात्ना। सुरदा सप्रभुतिहारी कृपातै। संतन
 दाखवात्ना॥२॥२७॥ राग विजाजल ता ल
 दौता लौ॥ जाना मे आजातु मिनी प्यारे स्यां॥
 तै अपनौ मन नां वतौरी आली की यौ॥ टेर॥
 रसक सुजांन लाफ लौ ललन तै॥ अनत क
 जांन नही यौ॥१॥ मो सों कछा डुरा वकरत हो
 ॥ डुरतन डुलक तही यौ॥ कमन दा सप्रभु
 गिरधर पिय को॥ अधर सुधार सपथि यौ॥
 २॥२८॥ राग विजाजल ता ल असवारी॥ अव
 धर कै सै जातु मेरी नईया॥ पन धट टा ठौ है
 री क नईया॥ टेर॥ का क को हार मोर रुपट नहे॥
 संकन मां न त रईया॥१॥ कवक कह सत बि
 लत उर कन संग॥ विच विच सुरली सब द सु
 नईया॥ दा सजन न हरषत प्रफुलत मन॥ नि
 रष नैन सुष वईया॥२॥२९॥ राग विजावल
 न असवारी॥ आनंद वधा वनो वधा व
 । गो॥ मिले आज मेरे हो सुरजं न वां॥ टेर॥ मो

तन चौकड़ा वीसवी मिला ॥ आनंद मंगल गा
वनो ॥ १ ॥ घुरत निशान नगरानां पत ॥ बंदन
मात्र बधावनो ॥ स्वरदास प्रभु तिहारी कृपाते ॥
निरखनैन सुषपावनो ॥ २ ॥ ३० ॥ राग विलाज
लताल धीमे तितालो ॥ आज हरि रैन उनी
दिआए ॥ ठिअंजन अधर लिटाट महावर ॥
नैन तं बेलर चाए ॥ १ ॥ दसन दाग नखरेषव
नीहै ॥ बंदन कहां लगाए ॥ सिध लदेह सिर
पाद्य लटपटी ॥ नृकुटी चंदन लाए ॥ २ ॥ वि
नगुन मात्र विराजत उर पर ॥ कंकन पीठ
गमाए ॥ स्वरदास प्रभु येही अचंनो ॥ त्रिय
ति लक कहां पाए ॥ ३ ॥ राग विलाज लताल
जल लहति तालो ॥ मरे पतर धुव रराज कंवा
र ॥ ठिअर कसी पाद्य के सरी येवगै ॥ गल मु
कता बलहार ॥ १ ॥ नैल लज नन लनै स
क ॥ लीला ननत अपार ॥ स्वरदास कर जोर
कहत है ॥ यहि नां मनिज सारा ॥ २ ॥ ३२ ॥ रा
ग विलाज लताल चलत तितालो ॥ हिली मां
रै सां वरै हिल दामित ॥ ठिअ ॥ फष सागर अध

करकरत है निस दिन रहत निचंत ॥ १॥
३३॥ राग विलाजल चलत तिता लौ ॥ मु
जरौ लीजो हो निजर मरो ये दी मुजरौ लीजो
गिरा मि तौ धां राचा कर जनम जनम रा ॥ कू
डक पट मत की जौ ॥ १॥ ३४॥ राग विलाजल
ताल चलत तिता लौ ॥ जलन मना कौ कन
इया मोहि नर न दे हो जलन मना कौ कन इया ॥
टेरा ॥ मेरे तौ संग की कर निकस गड़ी धर मधुजे
वे मेरी मइया ॥ १॥ ३५॥ राग विलाजल सर पर छ
ताल चलत तिता लौ ॥ मोपै पट मास्यो टोना
स्यां मस लोना ॥ टेरा ॥ नैनां विधले री मेरी आ
ली ॥ म्हु पषियन विच पां ना ॥ १॥ ३६॥ राग वि
लाजल ताल इक तालौ ॥ प्रिया पीतांबर हु
र लीजी ती ॥ टेरा ॥ हा हा करत न दे तू ना रुनी
चरन लुटत निस वी ती ॥ १॥ राधा या ही उरा
यं स श्री ललिता दिकर हो सची ती ॥ श्री विठ
ल विष्णु विनोद विहारन ॥ जगट करत रस
री ती ॥ २॥ ३७॥ राग विलाजल ताल जल
द तिता लौ ॥ धन धरी धन नाग हमारौ हर

जीकोहरसकरैमनमेरो॥टिर॥नक्तवबल
नक्तनसुषदायक॥रषियेचरनकवल
सांनेरो॥१॥सेवासमरणकबुनहिजा
ब्यातिरोहीविरदविचिरो॥दासजननकर
जोरकहतहै॥यहैबांनकमनमेरैवसरे
॥२॥रागविलाउजआमोचोतालो॥हर
कोअैसोहीसबषेल॥टिर॥मृघठदनाजगमा
परहीहै॥ककुबिजोराककुवेन॥१॥धन
जोबनमद्युंराजतहै॥युं पंढीयनमैटेन॥
कहैश्रीहरिदाससमऊमन॥तीरथकोसे
मेल॥२॥३॥रागविलाउजआमोचोता
लो॥लिंगयोरैसांममैरौमन२॥टिर॥वंसरीव
जाईमनबहरांनै॥सुखतनांहीननविन॥१॥
ध०॥रागविलाउजतालचलततितालो॥
आंठौनिजरांरौहैकांईम्हांसुराजरावण
नागाहांआंठौनिजरांरौ॥टिर॥सासबुरी
म्हांरीनलदहवीली॥पाफोसणकगडारो
जांठौ॥१॥धुंरीजीराजम्हांनेदासीकहैबै
करौमतप्रीतमैवांठौरसकसनेहीनिह

॥ जे नौ ॥ थारी सिफां मां है फरौ वांटौ ॥ २॥
॥ १॥ सुनः ॥ मन हरनी नौ राज मन हरनी
हो इन गगिया नै ॥ २॥ जं न मंत्र कहु मोह
नी सी पा दें टिना सो कर दी नौ ॥ ३॥ नांव
न जां नु कां न गां व को ॥

॥ वर जोरी शान न वी नौ ॥
॥ १॥ राग विना उल ता न तिता नौ ॥ १॥ धीत
पटवारौ अंगरंग को है सां वरौ ॥ नांव न जां नु
हो इया कां न को है मा वरौ ॥ २॥ तट ज म ना नु
के धेन च रा वि ॥ विन व ज वि ह स को ॥ आ की री
त ब तै मे रौ मन वा वरौ ॥ ३॥ ॥ १॥ राग विना
उल ता न तिता नौ ॥ च ल त ॥ के सै कर बंगरी
मोरी मुर कां नी मोरी माया ॥ रहो जु लंग र वा ॥
धी व मे हर वा ॥ गु न र स हा घ विकां नी मोरी
माया ॥ २॥

॥ १॥ ॥ १॥ राग विना उल ता न
च ल त तिता नौ ॥ तेन नि निर यौ श्री गिर वर
धारी ॥ र स ना र टां नां म निस वा सर को ट

।जनमडवदाखदहारी॥ १॥ सिवापरमस्फुट
रविराजत॥ यहसोनास्फुटरइधकारी॥ दु
जाधीसप्रनुसोनासागरा॥ मिनेवेमतन
मनधनवारी॥ २॥ ४५॥ रागतोमीताबधि
मोतितालो॥ दिनदिनआनंदकरतरह
त॥ ललनांलावनकेअंगसंग॥ दिसतो
हीस्व॥ हिन्नामिन्नातोहीस्वमनकेतरंग
॥ ३॥ ४६॥ रागतोमीताबधैतालो॥ अरी
छोऊदेखवनेअरसांनै॥ ढेर॥ कुसमतसेज
नोरउठवेवे॥ स्फुरतरसमसांनै॥ ४॥ द
रपनलेकबक्तबविनिरषत॥ सीतवस
तस्फुषसांनै॥ नंददासप्रचुरीजेयरस
परा॥ अंगअंगपयसांनै॥ ५॥ ४७॥ राग
आसावरीताबडुतालो॥ मेरीअधियनके
न्यूनगिरधारी॥ ढेर॥ बलिबलिजाऊब
बीलीबविपर॥ अतेआनंदस्फुषकारी
॥ ६॥ परमउदारचतुरचितामण॥ दरसपरस
स्फुषकारी॥ अतुलप्रतापतनकतुलबीजन
मांनतसेवानारी॥ ७॥ सीतस्वामीगिरधर

नविदसजस॥गावतगोकलनारी॥कहा
वरनांगुनगाथनाथके॥श्रीविठ्ठलहिर
दयविहारी॥३॥४॥रागआसावरीता
लुलालो॥हांबलिवलिजाऊतिहारेदो
ललनांआजमेरैकैसेहोपावधारि॥दे
कांनमिसआवनोवनोपीवमेरोजागेहै
जागहमारे॥१॥अबहीकहानवठावर
करहां॥स्फंदरनंदुलारे॥नंददासप्रनु
तनमनधनसब॥तेपैहलैहीउवारिार
॥४॥रागगूजरीतालचौतालौ॥उठ
तनोरलाजजूकेसंग॥कंचुकीकसत
राधिकाप्यारी॥टेर॥किसकिसपरत
नीलपटसिरहीतै॥सिसवदनीनव
जोबनवारी॥१॥अननावतेलाउन
गिरधरजूकी॥रचीहैविधांतसोहस्त
संवारी॥जैश्रीनटसरवरंगनीदै
प्रियासहितदेवेऊजविहारी॥

रागभुजरीताळडतालो॥ महीकोधम
कोहोय॥ तुष्टगिरधरनाचे॥ महीकोधम
कोहोय॥ टि॥ कटकिकनीधंनप्रचप
नंदपरा॥ सहजमितेस्फुरहोया॥ दृष्टत
नेकंहतनहीआवे॥ उपमाकोहुजोन
हीकोय॥ सूरनवरकोतिवरनिसाये
रहेस्फुरनरमुनिजोय॥ २॥ ५१॥ रागभुजरी
वीताळडकतालो॥ हिम्वारीजोडीरारा
जिहपनाथितोदुरवसौराजकूजीहोमां
रीजोडीराराजिहपना॥ टि॥ कवकीहुवाव
वाढीअरजकरांबां॥ उवास्वथांपरहीरामो
तीधना॥ १॥ ५२॥ रागभुजरीवीताळडकतालो॥
हिम्वारासांवलासाजनराज॥ म्हांदुदर
सहीद्विषाजामांरासांवलासाजनराज
॥ टि॥ उनीऊनीमुधानेणीअरजकरे
ठे॥ सुसरंख्याठोकिणकाज॥ १॥ ५३॥
रागभुजरीवीताळडकतालो॥ काईज

गुनोन्ह्यांरौकीयोवै। मांनैमिनायद्यैसाहि
बाहंराजा॥ टेरकिटोबीदेसांज्वारीबूदीब
देसां॥ धांस्वन्गोमहांरौकाजा॥ १॥ ५४॥
रागनैरवीतालतितालो॥ साथीडांमहांरौ
साथनितांण॥ हमपरदेसीमुखकविरांण
॥ टेर॥ इसडुनीयांविचवेआवणाबीजांवणा
मेराप्यारा॥ अपणासोअपणाविरांणसो
विरांण॥ १॥ ५५॥ रागनैरवीतालतिता
लो॥ आदमआदमआदमदमदा॥ इहदम
जुगविचक्युकररमदा॥ टेर॥ बाममगस्तर
होअपनीजमगनालमेरासांण॥ इस
डुनीयांविचयेहीनलाकमदा॥ १॥ ५६॥
रागनैरवीतालतितालो॥ सांवलाकौद
रसदिषावौमेरीसजनी॥ सांवरोहैकाम
णगारौमेरीसजनी॥ सांवराकौदसदि
षावौ॥ टेर॥ इनदिष्यांविनकलनकरतहै
॥ इनहीकौगुनगावौ॥ १॥ ५७॥ रागनैरवी

वीता लक्ष्मी भोतिता लो ॥ जर छटपटावा
 लानी सांवला ॥ तिमिर मुकट पीतंबर
 सो हो ॥ गज मोत न गल माळा ॥ १॥ ५६ ॥ रा
 ग नैर वीता लक्ष्मी भोतिता लो ॥ मैतौ ऊ
 ईयां क्वात क सीर मैरे साज नां ॥ मैतौ ऊ
 यां कीत क सीरा सां ही पीर न प्यारो ही ज
 ण हा ॥ तिरा क ब की मै वाढी गढी अरज
 करां खां ॥ प्यारो मै न हिल की जां ण हा ॥
 रा ॥ ५७ ॥ रा ॥ नैर वीता लक्ष्मी भोतिता
 लो ॥ उम मै जोरा जोरी बे ॥ हिल हा मै हर
 म मा स्तुडामि जा जी डा ॥ तिरा ॥ उर देखां
 दिन कल न परत है ॥ पिया चतुर ह म नो
 री बे ॥ १॥ ६० ॥ रा ॥ ग नैर वीता लक्ष्मी भोतिता लो
 ॥ मन मै रो मो ह्यो रे इ न वं सी वारे मै मन मै
 रो मो ह्यो रे ॥ तिमिर मुकट पीतंबर सो हो
 श्रवन ऊरु ल व वि सो ह्यो रे ॥ १॥ ६१ ॥ रा
 ग नैर वीता लक्ष्मी भोतिता लो ॥ आज हारै आ

जिहो सां वला जीयेतौ आज म्हां रै आजा ॥ दि
रा ॥ डब्डीर तन जडा वकी लाजा ॥ रंगर
संवात वणजा ॥ १२ ॥ दशराम जै रक्षिता
ज्जल दत्तिला लौ ॥ म्हां नै प्योरो लागे बै
सां वरो बं बालौ हो म्हां नै प्योरो लागे बै ॥
दिशा ॥ सख सागर अघ हरत कृपा करा ॥
रस कीयां डूब लागे बै ॥ १३ ॥ कंठ सरी ड
वर हीरत की ॥ किसरी यै रंग वीगे बै ॥
रदा स प्रबुद्धन के सरणी ॥ ताग हमारे जा
गे बै ॥ १४ ॥ देश ॥ राग सारंग ॥ ताल चौताल
॥ नैन न नीद गइरी आली ॥ निस दिन
मिरी छतियां लपौर हे धर को ॥ टिरी ज बने
मोहन मुरली बजाई माई ॥ सुध नर हीर
क बू ॥ और दिहत मोहि धर को ॥ १५ ॥ नंन
दीउ सा सजेत ॥ निस दिन गारी दित ॥ स
सत कत मेरी पायन को धर को ॥ कैसे
कजई यै कैसे दरसन पई यै ॥ कहु कहु

नगिरधरको मेरो हाथ नयौ पातर तरको
॥ १॥ ६॥ राग सारंग तात्त चौता लो ॥
बैठे हर राधा संग ॥ कंज नवन अपने रंग ॥
कर सुरली अंधर धरो ॥ सारंग सुरगाई
रा ॥ ६॥ मोहन अतही सुजांन ॥ परम
चर गुन निधांन ॥ जांन ब्रह्म एक तांन
इक कैवजाई ॥ १॥ प्यारी जब गहो वा
न ॥ सकल कला गुन प्रवीन ॥ अतन
वीन रूप सहित वेही तांन सुनाई ॥
वल नगिरधर नलाव ॥ रीऊ दई अं
क माधव ॥ कहत न ले न ले न ले सुंद
र सुषटाई ॥ रा ॥ ६॥ राग सारंग तात्त
चौता लो ॥ मेरे बल दीऊ ओर को ॥ ६॥
इक बल है मोहि हरन कनको ॥ इजो बंध
किसोर को ॥ १॥ मन वचन मकर उग्र ही
मेरे ॥ नां हि नरो सो ओर को ॥ श्री विठ्ठल
गिरधर न कृपानिध ॥ वधन कल सिर मे

रकौ॥२॥६६॥रागसारंगतालइकतालौ॥अ
रीइनलोगनकौकाहाकीनो॥मैंअपनोम
ननावनदीनो॥टेर॥मनदेमोत्तलंयोरस
जनी॥उममननावननंददुआरेनवल्ल
लरंगनीनो॥१॥६७॥रागसारंगतालचल
लतितालौ॥परनलागीगीषविरषवासो
बलमामोरियहसंतगवननकीजिये॥टेर॥
हरेहरेसतवाकेधनवननाए॥तितितलव
टसुखनीजिये॥१॥६८॥रागसारंगता
लचलततितालौ॥हरीमाईकांनदेसकां
ननगरवांजायवसेरवाजहांमेरापीव
रवाहरीमाईकांनदेस॥टेर॥विषविषप
तीयापियाजूकमेदू॥बायरहेवाकदेस
॥१॥६९॥रागसारंगतालतितालौ॥आ
नंदआजवधावनेमिरैघर॥आपुमिरे
पीयाहीसुरजनवा॥टेर॥सगरीसुधीसिंत
मंगलगावो॥मोसीयनचौकडराइनो॥

रागसांवतसारंगतालइकताले॥ होवि
रईयांकीठांही॥ पियाजगवनकीयोवि
दिसअंबरईयांकीठांही॥ टिर॥ वक्तुजी
विराजाम्हांराबागमैहोराज॥ किणविध
दिसलमेजांई॥ १॥ ७॥ रागसांवतसारंग
तालइकताले॥ वारीछान्नवरारोहोव
रीछान्नवरारो कंधाम्हांरैआमोबारणे
होवारीछान्नवरारो॥ टिर॥ सगरीसषीमि
लगइवाकूदिसवा॥ काचीकलीयनजन
बिडेरे ॥ १॥ ७॥ रागसांवतसारंगताल
जलदतिताले॥ होगुमांठीम्हांराबीरमा
रबीरमा॥ टिर॥ नोहैतौसादीतेरीबणी
हो कबांणबे॥ अषीयां तौसादीतेरीती
रण॥ १॥ ७॥ रागसांवतसारंगताल
इकताले॥ वसरोबंगलोबवायदोहोमां
वलाजीम्हांनैवसरोबंगलोबवायदो॥
टिर॥ ओखसीरकीवनीरावटी॥ जाली

ऊरोषाळगाथहो॥१॥७५॥रागसारंगल
हरताळइकतालो॥मांहीस्तुहोनेहडको
निनाजोहोपनामास्तुजीराजमांहीस्तुजीने
हडकोनिनाजो॥टिर॥ऊनीऊनीचुधा
नेलीअरजकरैठे॥इकवारमेहलांथेअ
जो॥१॥७५॥रागलूहरसारंगताळइकता
लो॥वैगानेपधारोमंरैपांवणाहोव्याळ
डाळाळ॥टिर॥आठोजगमिंदरांथांरै
वैसणो॥आठीआठीउनालाथारीमौजे
॥१॥७६॥रागलूहरसारंगताळजळड
तितालो॥होमंरैपनाजीरैडपटोदीजेहो
दरजणमंरैअंगीयारैहवादि॥टिर॥हिहो
राकांनांनैजाळघडावजो॥मंरैविसर
रतनजडावोहो॥१॥७७॥रागलूहरसार
गताळइकतालो॥पनाजीनैकैजोहोच
लआजोमंरैपांकुणादिसोतीनैकैजे
होचलआजोमंरैपांकुणो॥टिर॥

घाटीतौ नगारारे म्हां राहे जा मारुहे स
एगहिजा कांई ठापर नु न क्यो वे से न ॥
७८ ॥ राग दुहर जंगला तो लइ कता लो ॥
कांताजी कांमणगारा ये तौ म्हां नेवा ला
ला गौराज ॥ टि२ ॥ बरी डपैरी कंजां म्हां ही
यां सु म्हां रौ काज ॥ १ ॥ रंगरंगी लो छै लव
बी लो ॥ लो गा लो सिर ताज ॥ वृजनिध म्हां
रे मन मैव सीया ॥ आघा पृ धारौ राज ॥ २ ॥
७९ ॥ राग दुहर जंगला तो लइ कता लो ॥
गुमां नी डा परदे सन जा ॥ म्हुमर वर से ला
पांणी ॥ टि२ ॥ चप चप पां नी पग पग पां नी
॥ अरुन करे छे यां री मृ घाने न ॥ ३ ॥ ८० ॥
राग लट ला लइ कता लो ॥ वीतम वीत हति
पई ये ॥ टि२ ॥ जद पि स्तु प गुन सी ल सु घ
रता ॥ इन वात न रि ऊई ये ॥ १ ॥ सत कल
जम व वी न सु ल व न ॥ अम त डरां न पद
ई ये ॥ गो बि द्ध न्दु वि न्दु सने ह स वा स्तु ॥

रसना कहान चई यै ॥२॥ ८१॥ राग नट
 लुडता लौ ॥ तासों मांन की जियै जौ ॥ अ
 पकरत है निहारे ॥ टेर ॥ रस के रसीने ला
 न ॥ रस सों करत ब्याल ॥ उचारों लाष कि
 रारे ॥१॥ ८२॥ राग नट ता लुडता लौ ॥ म
 धो माधो नां वली जियै जौ ॥ बौहत कर
 त है नो हरे ॥ टेर ॥ आंन गहे के सहुत ज
 व ॥ फिर पिछता वोगे बोहरे ॥१॥ ८३॥
 राग नट ता लुडता लौ ॥ कांन तेरी मुर
 ली नैक बजाऊ ॥ टेर ॥ जोही जोही तांन
 सुनत तेरे सुषकी ॥ सोही सोही गाय
 सुनाऊ ॥१॥

॥२॥ ८४॥ राग नट ता लु

डता लौ ॥ आज वन वन लालन न्याएर
 तरे ॥ मांन करनां बावर ॥ टेर ॥ जह पि

बोहनायक ककुन मन अट कोरी तिर
गुन रूप मोही ताते तो से हैरी नवर ॥
॥ ऐ सैरी लाल न परत न मन धन ॥
जि ॥ समज सयांनी घरी घरी घटत बि
नांवर ॥ हुती केवच न स्तन प्रेम मग
न नई मिलीरी गो बिद प्रच्छुराषी बंध
महागदांवर ॥ २॥ ८५ ॥ राग सिंधवी
ताल चलत तित्तालो ॥ राज थां नै जां
एपा होरा ज थां नै जां एपा ॥ ८६ ॥ डी ला पेच
लजी ला नै लां ॥ राज थां रा अड वड
बोळ पिठां एपा होरा ज जां एपा ॥ ८७ ॥ मछ
उकी या माहाराज राजवी ॥ राज थां रा
सिज डी यां रंग मां एपा होरा ज जां एपा ॥ ८८ ॥
८९ ॥ राग सिंधवी ताल चलत तित्ता
लो ॥ म्हुं नै एपा रा ला गो होरा ज ला गो
॥ राज थां रा पा थां रा पेच सवारे हो ॥ ९० ॥
महब कन स्या उनी दा नै लां ॥ राज थां

रौकेसरीयांधूमात्नौफुलांनारौहोराज
नारौ॥१॥८६॥रागसिंधवीतालधीमो
तितानौ॥मांहरैमैलांआजोहोराज
आजोहोराजधारीप्यारीजीकहैवैर
गनानो॥देरागजमोतनकीवेसरना
जोराजमहांनैनौडीलागीकैहवतनानो
हो॥१॥८७॥रागसिंधवीतालधीमोति
तानौ॥मंरौमनमोह्योहोराजमोह्यो
॥राजधारांरौकेसरीयोःनपेटौमनमो
ह्योसाष्टीडांरीजोडवणीअत
नारी॥राजधारांरौगजमोतीगतसोह्यो
होराजमोह्यो॥१॥८८॥रागसिंधवी
तालधीमोतितानौ॥राजमहांरीमां
नौहोराजमंनौ॥किणओगुणधासोहो
पनामहांसुरीसलो॥८९॥

तन॥ मधर ताइ मुख वै न॥ उजल चीर परम ल
धरौ॥ लाज वंत कै नै न॥ १२॥ बपै॥ चंचल चपल
अति स्थां प्रनै न मृग कुटिल च कुटिल वरा॥ तिल
कमेद सुकनास त्रिवली जहां होइ कंठ तरा॥ वच
न गमन जिह हीन अंग को मल विचित्र अति॥ त
न सुकल म कटि धीन अंग टहां मनी देह डति॥ अ
नेद चंद वरन न वदन सदा अंग निरमल रहै॥
आहार पांन अषित अमल विमल वौर बैवो चहै॥
॥ १३॥ सवैया॥ बाल सी वैसर है सब ही दिन॥ प्रांन करै
अति ही कबुल जै॥ स्वित सरोज हि हेत धरै अति
उजल चीर सरीर हि बजै॥ वारज को सब नो यह
कांमनि वीरज नीरज वासु विराजै॥ दिह जही म
अनंदति रंजा के रूप पदम निराजै॥ १४॥ अथ
चित्र नील बन॥ दिहा॥ चित्र रूप सम चित्रनी॥ अ
ति विचित्र सरीति॥ चित लावत सब कांम तजि॥
निरख चित्र संगीता॥ १५॥ नहि नारी डर बल न ही
लक्ष्मी रघन हि अंग॥ अति विचित्र ताइ चित्रनी॥
लोचन चक्र करंग॥ १६॥ बपै॥ अमल कमल द
ल वसन नैत चंचल अनीयारौ॥ मधर मुख वच
न वासु कंचित कुच कारौ॥ लक्ष्मी रघन हि अंग
सरबत नगर बजनावत॥ दया वंत अति होत उ
प परम ल बजनावत॥ ग्रीवा कपोत गुंघट उरि
य गति गय द आनंद जिहि॥ सील वंत सुविचि
त्र अति कदलिषं न ऊग जंघ जिहि॥ १७॥ सवै

या॥ कामको धाम वनौ अति सुंदर वार को नाम न
 ही संग जाके॥ वरु ल होय न होय सो दीरघ वास म
 नौ मधकंद पता के॥ चाह न ही चिर को रति चित्रण
 दृष्ट ए सवलक्षण वा को रां मरु पाविन काम की
 ल को ऐसी यो नाम नि धाम है का के॥ १८॥ अथ
 षणी लखन॥ तन दीरघ दीरघ लुजा कर पद दीरघ
 नाम॥ चलत चल उताल अति जान संघनी नाम
 ॥ १९॥ संघ निरुस कर कस वचन॥ दीरघ डुर बल दि
 ह॥ निहचै अविलंब त चलत॥ जान संघनी एह
 २०॥ खपिया॥ लघ लोचन अस कुटिल ग्रीव पि
 दीरघ नारी॥ सदा पीन तन रहे जगर कटी जा को ना
 री॥ कुच मम मन कुटिल अधिकता मस तिहि
 काम नि॥ असुण कुसम परिवस घीत चाहति
 ति नाम नि॥ डुर घहिल पटति रति समै असु क
 लावत दृढ कीये॥ स्फुरत करत हारत नही सेन
 यो चाहत हीये॥ २१॥ सेविया॥ घीत कीरी तन जांन
 ० नै करु काम की लोल को आउर नारी॥ पिम
 की वात अजांन सुधा उर कंदू जो नि कुवास कु
 मारी॥ कारु सों नै कम या न करै सब लख न ही नइ है
 न धारी॥ पाप कीये जिन को टिक घुरव पावन सो न
 ऐसी नारी॥ २२॥ अथ हस्ति नील बनी॥ तन नारी
 नारी लुजा॥ नारी उर ज अतंदा॥ नारी ग्रीव
 नितंब जै घा॥ चलत हस्त नीमंदा॥ २३॥ चिपई मरु
 नमत सदा जार हो॥ आनंद वचन न कारु कहो अ

पनी अस्तु त आ पडुकरौ लाज वृत्त को मूल उषारे॥
अंकुस धर्म कां न गहि मारौ॥ घाप पत्वार सब अंग विषा
रौ॥ कट अरु जंघ कलाई मोटी॥ करत लड्डु अंगुली
या छोट्टी॥ निमर वचन अपस्वार थ करौ॥ गुरजन स
कन मन मै धरौ॥ २४॥ उहा॥ अपजस की सलता धरै
वहु लंघन हि जाय॥ पंग बंधन अपकृत कौ॥ हस्त
न हस्त स्फनाय॥ २५॥ सवैया॥ कांम किलो लस मै आ
ति आउर पाय उ नै पतियी वलि मारै॥ जो निकषी
रुटे दोऊ फवाहर ही उरवार न पारै॥ कंद पगंध
पगंध वहै इहिने विचारै॥ किल स मै पति हारत
वेग ही नै कन हस्तिन को मन हारै॥ २६॥ सौरग चित्र
ली हरली जांन॥ संघन रे पउरंग नी॥ हस्तिन हस्त सा
मांन॥ पद्म निकी उपमान ही॥ २७॥ षट कर पलव चित्र
ली॥ नव संघनी सरीरा॥ वादश हस्ति निजां नीयो॥ इह वि
ध जिनि गं नीरा॥ २८॥ इति श्री धर्मिष पंम समाप्तं॥ अथ
पुरुष जात वर्णनं॥ उहा॥ समा करंग म दृष न हया॥
पगट पुरष ए आरानय सिध लग लछन सकला॥
कहे विचार विचार॥ २९॥ अथ सखिल लनं॥ सुकृत म
कोमल मधु वचन॥ सील वंत सुगुण न॥ रति विनो
द अति सुचन ही॥ पुरष ऊस सांरु जांन॥ ३०॥ अथ
करंग लछनं॥ मधुर वचन मृग मधु तन॥ चपल
बुधि चित नीरा॥ चउर साध अति हस्त सुष॥ कामी
कनक सरीरा॥ ३१॥ अथ दृष न लछनं॥ दृष न ना
म नारी पुरष हाता कूर स्फनाव॥ कपटी लछनं पट

हरी॥ कामकेन बऊचाव॥ ३२॥ अथ उरंग लहने॥
 तनदी रघदी रघचरण॥ नयसिखदी रघअंगा॥ सु
 नरुतरुणसंगहृदवत॥ रसीया अधिकउ
 दुहा॥ चतुरषटनवजोना॥ दादसकरपध्ववप्रग
 ॥ मदनांकुसपरवांन॥ ससाआदजो नऊ ॥
 ३३॥ ३४॥ ससाउरषपदनिविया॥ समरतिया
 नांमा॥ उजैपरस्पररतिवहो॥ औरनसो नहीकां
 ॥ ३५॥ इति तृतीयधं॥ अथ समरतिवर्णनं॥ ३६॥
 हय करनी हरनी हरन॥ वृषनसंघनीसंग॥ इन
 मनिस्फुल्लपजै॥ वटै प्रेमउल्लंछंग॥ ३६॥ अ
 उच्चरतिवर्णनं॥ सोरग॥ वृषनकुंरंगनिसंग॥
 वरउरंगउरंगनी॥ मतवचइनकेसंग॥ प्रगट
 उच्चरतिजांतीयै॥ ३७॥ ३८॥ उरंगनिसाथा
 रषवृषनकरनीचीया॥ इनकेजनमअक्या
 ॥ प्रगटनीचरतिजांतीयै॥ ३९॥ अथ उच्चरति
 वर्णनं॥ ४०॥ हयहरनीअतिउच्चरति॥ मृ
 करनीअतिनीचा॥ नरनारीतैजौअधिक॥ तौ
 स्फुल्लसेआबीच॥ ४१॥ सोरगजैसीजोनिगंजी
 मदनांकुसजैसौचहो॥ तौस्फुल्लहोयसरीरा
 कसारइमजचरै॥ ४२॥ इति चतुर्थधं॥ ४३॥
 जिहत्रियकौरतिसुचिनही॥ पियविलसैजो
 हि॥ नीमनिमुदतनहोयकबु॥ वृथासक
 यआहि॥ ४४॥ अनसुचित्रियपुरषहिमिलो
 हिकीकदमनाइ॥ जैसैरोगीनीवकौ॥ अंघ

पीजाय॥ अजिजनजांनैकोकपठि करै सजत
विचार॥ अतस्तमउपजै रबनिकों॥ रतिसचि
मांनै नार॥ ४३॥ अथकांमनिवास होहा॥
मकैवांमदिसि॥ वसतसद्यंगर॥
जगायकै॥ पियविजसै तियसंग॥ ४४॥ तदुपधरी॥ प
वाअसितश्रीमंतकांम॥ तिहकरजदतरति
नांम॥ द्वितीयादगचुंबनकरतकंत॥ ४५॥
सुदितत्रियअधरदंत॥ जबचौथकांमआवैकपो
॥ तबचुंबनवंदनकरिकिलोल॥ श्रीवांपाबै
काषमेत॥ डुडुगौरकहो नवदांतदेना॥ सांसा
रमदंतकरैउरोज॥ तबवसतआयनैहचैममो
ज॥ आवैजुकांमकोकोइहविचार॥ करमरदन
कीजतताहिहारि॥ नवमीसुनानिकटदसैहोय
करिमरदनकीजतअंगहोय॥ एकादसमनसिज
जगनिवास॥ तहंमदनधांमकोकरैवास॥ तादि
नजोकीजैबहुप्रसंग॥ तबप्रवैतरुनितबही
अंतंग॥ द्वादसिमनौजतिहजंघसंग॥ रतिरा
वनत्रयोदसगुल्फसंग॥ चोदसकोचरणकरै
निवास॥ अमावसपगअंगुष्ठवास॥ करमर
नकीजतताहिहारि॥ इहाविधजुरुच्युप
जहिविचार॥ ४५॥ ४६॥ अमावसपरिवाविम
न॥ पदअंगुष्ठअंतंग॥ जिहमगउतस्योरतिरा
वन॥ चटतचत्थोतिहअंग॥ ४७॥ कृष्णद्वको
आदिदि॥ सुकलपदविधजांनानंजहिनैति

तिथिनिर्णयके ॥ अंगकीयापहिचाना ॥ ४७ ॥ मंग
 लाबंद ॥ ॥ पदमनीपरिवाहजपाचैचौपचाहे
 जोग ॥ चित्रणी आवैबविदसमीवाहसीसंयोग
 ॥ संघनीसातैतंजतिरसशृंगारसदहतमनोज
 ॥ हस्तनीक्ष्मींनवमिचौदसवचनविक्रतचोज

१	१५	मंगमध्येनयदानकरण
२	१४	मावीआंघचुवनकरण
३	१३	अधरमध्येषमनकरण
४	१२	गालचुवनकरण
५	११	कंठमध्येनयदानकरण
६	१०	कायमध्येमरदनकरण
७	९	ऊचमध्येनयदानकरण
८	८	उरस्थलमध्येनयदानकरण
९	७	नाभिमध्येनयदानकरण
१०	६	कटिमध्येमरदनकरण
११	५	नगमध्येप्रहारकरण
१२	४	जंघमध्येमरदनकरण
१३	३	गुल्फमध्येमरदनकरण
१४	२	चरणमध्येमरदनकरण
१५	१	पगअंगुष्ठमध्येमरदनकरण

॥ ५५ ॥ निसविचमरतिपदमनी ॥ ज्ञानचित्रणी
 ज्ञान ॥ वीतीनिसविधमंयनी ॥ इति

रंम॥धर॥इतिपञ्चमस्क॥अथस्त्रीवैसख
नो॥कंसागौरीसमरुके॥बालातरुणीजान॥वि
टावृधानांमनी॥एषटवैसवषांन॥५॥अपि
॥सातवरषपरजंतस्फकंसाजांनीये॥तासौका
मकिलोलनकवक्तगंनीये॥बालापणकौषेल
सदामननावई॥फुनिहां॥कबुइकलोकविला
सनमनमैआवई॥५॥आठवरषतैगौरीतेरह
केतले॥चाहेचतुरषिलोनासंदरअतिनले
॥जोजनविलसेतासअधिकसुषपावई॥फु
निहांताकौअधिकविलासनकवक्तनावई॥
५॥बालातेरहआदिज्जवीसहकेतले॥चाहेप
नप्रसुतस्फसोरंनअतिनले॥तासौकामकि
लोलहेतजोनावई॥प्रीतवडेडुक्तओरमहास
षपावई॥५॥तीसवरषपरजंतस्फतरुणक
हावई॥नूषनचीरअनुपताहिअतिनावई
॥तासौकामकिलोलहेतजोनावही॥धरणप्र
मअनंदपरसपरपावही॥५॥बालिसवरषप्र
माणसप्रोढानामनी॥चाहेओरकबूधेमंतजि
कामनी॥जोजनकामकिलोलताहिसंगनावई
॥फुनिहां॥नावअनेकसौतामिनिताहिरिज
ई॥५॥फुनिवृधात्रियहोयश्रवणसुणलीज
ये॥तासौकामकिलोलनकवक्तकीजीये॥आं
मनिधोरीप्रीतबोहतकरमांनीये॥फुनिहां॥
आपनवेसविचारआपजियजांनीये॥५॥६॥

॥ जो मन नावै नामिकै ॥ पवै देहि सौ ताहि ॥ प्रव
 वत हित चित रुचि वढै ॥ करै प्रीत निरवाहा
 ॥ ५६ ॥ इति षष्ठमं ॥ अथ नारी परिच्छा
 ॥ द्विगुन कृधा काम निज वरा ॥ मन
 ह वषट्गुन होय ॥ मदन अष्टगुन लाज दस ॥ ति
 यय हविध सव कोय ॥ ५७ ॥ अथ विन चारण
 लबन ॥ फुरवे सर ठं ॥ विन चारण संग रहै जो क
 मनि ॥ रहै सदा माय के नाक नि ॥ बज्र उर पत
 मै नारी रहै ॥ ना सै शील को क इम कहै ॥ ५८ ॥
 विरक्त वती लबन ॥ दोधु क बंद ॥ उतर
 विगत दैक वरूप तिकै मुख वोरन वाम निहारै
 ॥ पौटै पीठ द्यै प तिकै संग चुंबन को मुख पौठ
 कै मारै ॥ जो पतिकै कोऊ आवत प्रीत म डर ज
 न सो अपनै जिय धारै ॥ लबन ए जिन पे म त जे
 प्रीय दठित होय सो निद विचारै ॥ ५९ ॥ अथ अ
 नुराग वती लबन ॥ ठपै ॥ दृग नरि निरय त ति
 ल जह सत कुलु अंग दिसावत ॥ बिन मुख देत
 उधार बिन क मुख द्यै दुरावत ॥ चलत थं कत
 ऊपर रहत चरण आनरण सुधारत ॥ कर क
 दाक्ष मुख मुदित प्रगट न ट लटी संवारत ॥
 पलव चरण उह दीषन त पिय निहारि कस
 त ऊच ॥ अनुराग वती इहि विधिरहि प्रीतर
 त जिहि अधिक रुच ॥ ६० ॥ अथ नाना वती
 लबन ॥ चित वत कर गहि

रदन नारिसि॥ अधर आपरुचि गहित
गबज देयत आरसि॥ सविकों अंकहि नर
सुकर पद्म वचम कावत॥ दोर पौर पे आय
विचित फिरि चक्ष लावत॥ अति जेनात बि
न समै चित कंबज सुकुच लजा करत॥ अ
चल उरो जट पतन ही मदन मत्त शहिविधिर
त॥ ६३॥ अथ कामावती लखन॥ जब
वन मद मत्त कंत विबु स्यो चिर कालहि॥ काम
निन ए प्रसूत देत जल निज नालहि॥ पुष्प
ती जब त रुणि मास दाय वीचत जातन॥ नौ
नग न निवास काम बज्र मापत तातन॥ ६४॥
॥ ६५॥ नवती लखन॥ दोहरा॥ नैन न मावे सिथल
तन॥ कहै सुकं पत बैन॥ कलिक लाइ बूटो च
हे॥ जब हि इव हितिय में न॥ ६६॥ अथ नारी वि
॥ ॥ निलज कर बोलत अधिक॥ अति ता
मस अति हास॥ कहै कोक वहत रुणिके॥ स
कल कल लखन तास॥ ६७॥ जाकी जुग चां है जु
री॥ ऐसी जौ त्रिय होय॥ कहत कोक वह कटि
लमवत॥ नाहिन पतीया कोय॥ ६८॥ तन कं पत
मारग चलत॥ चष पिंगल उर वाल॥ जहां तहां
उम देषीयो॥ विन चारन वह वाल॥ ६९॥ गिरत
वर सरिता विहंग॥ जिहिन पच कोनां म॥ प्रगट
जुगत मै देषीयो॥ विन चारन वह वां म॥ ७०॥
जिहकै पग अंगुष्ठि घटा॥ उपगा जौ वटि होय

आहतहीपतिकोंहरै॥ नूननआहोकोय॥
 ॥६०॥ जाकीनानिगं नीरनहि॥ अवरणहोयजिहि
 रूप॥ निसंचैहोयदरिद्रणी॥ जदपिसंग्रहेनूप
 ॥६१॥ दीरघहोयअनामिका॥ उपगातातेहीना॥
 ताकोपतिजीवतरहै॥ वर्षदोयकैतीन॥ ६२॥
 कथावतीनिजावती॥ सोगवतीसीनांमा॥ उच्च
 केसरसनांकविना॥ कबऊनपावैदांमा॥ ६३॥ अ
 तिलफअतिहिविसालतन॥ अतिलंगरस
 होय॥ तातियकोअपनायकौनेदनदीजोकोथ
 ॥६४॥ एकपीतइकछीनऊच॥ अधिकछीनऊच
 अंग॥ वातकरततिहितसालिके॥ फलनतिग्री
 वउतंग॥ ६५॥ रोमहोयसबगातपर॥ चलतचा
 लउत्तालअतिदुरबलअतिछीनतन॥ सोल
 नपावैबाज॥ ६६॥ जाकेरूपकपोलपरा॥ वातक
 हतहोइजाहि॥ तातमाततिहांतसालिके॥ नि
 संचैजीवैनां॥ ६७॥ अधरपांनतालूरसन॥
 दसननऊपरस्पांमा॥ उच्चदंतदीरघअधिका॥ रां
 ददरिद्रणवांमा॥ ६८॥ जाकेअधरविसालअति
 बोलतसदाऊवैणा॥ एतारीनहियाहीयो॥ नि
 रयपरपयुगनैण॥ ६९॥ शतिसप्तमधं॥ विर
 कहेतु॥ कुहलिया॥ जिनहिजांनैषीतगति॥ र
 हैमलिनसोनिता॥ पतियारौतिहिनांपरै॥ न
 मुराषोअतिचितर॥ वचनसुयडुटसुनावै॥ ७०॥

कवि न कृपण अति होय ॥ धन ही आपस वाके ॥
॥ सो गवती सीर है वात नहि मुदित सुखाने ॥ श्रीत
हरण तब होय ॥ श्रीत गत जो नहि जांनै ॥ ८० ॥ दुहा ॥ पि
य नागर मूरख त्रिया ॥ त्रिय नागर प्रिय कूर ॥ प्र
नव च उरुं के नां मिले ॥ होय श्रीत रुच हर ॥ ८१ ॥
॥ इति अष्टम पंद ॥ अथ पुर मष्ट गार वर्णन ॥ वि
हता ॥ अति उत्तम तन वास चीर परम लसंग धा
रत ॥ पांन नि आंन नि असु पराग छिन रज चार
त ॥ रतन कनक नुरमाल हास्य वचन तन मुख ना
सुत ॥ मन उदार ताबहुत केस नां वि अति आ
षति ॥ आनंद तरुण चित हित वढत इह वि
ध जो कांमी रहत ॥ मनु हरन हरै लपत न कांम न
क बुज पाय इह विध कहत ॥ ८२ ॥ अथ दूती वण
न सार ॥ नृपति मंत्री हीन ॥ दूती वित कांमी पुर
ष ॥ एहो कुत रहतीन ॥ को कैं सार इम उचरे ॥
८३ ॥ वंदे जुंजी ॥ सुखी मालनी आलनी योचिते
री ॥ नटी नायनी घोबनी धाइ चरी ॥ सुसंभास
नी नाटिनी बालवारी ॥ तं बोलणी त्रिया एडुति
का विचारी ॥ ८४ ॥ इति द्वाव प्रपंद ॥ अथ सीर वं
रण ॥ दोहा ॥ सिव दीरज लोहा हमे ॥ कनक सु
तां बाहोय ॥ चारौ धात सुधात सुधात कर ॥
धातिरसिक सब कोइ ॥ ८५ ॥ पय द्युत आमि
ष मोचरस ॥ मिरच मूसली स्याम ॥ मधु मुंही

... ॥ ५७ ॥ नमः शुद्धी अनिराम ॥ ५८ ॥ संपाति
 ली गुड उड हा जो कं पी पर पं ॥ कौ च बी ज धो धान
 टा ॥ असु म कु नि जी मं ॥ ५९ ॥ न म र द न तिल ते न
 कौ ॥ पर म ल पा नि जि त्रो ॥ ६० ॥ अ व र क हू जि ल म लौ
 धा त स ब न मै हो ॥ ६१ ॥ उ द नारा ज ॥ न द न पु व
 नौ म रै न ए क भै र पा ई थै ॥ मं गाय मा ल कां गु नी स द
 मै नु ना ई थै ॥ टां क हो प्र मां न जां न प्रा त उ व धा
 ई थै ॥ कां म नी ॥ कि लो ल तै ॥ अ न दं कं द पा ई थै ॥ ६२ ॥
 ॥ ॥ धा त व धा र न ब ल कर न ॥ ह म पू ठै जो को ई ॥
 प य स मां न ति कुं लो क मै ॥ अ व त न उ व ध को
 ॥ र ति की अं त ज प य पि थै ॥ ध टै त ब ल ति ह अं ग
 ला हि र व न की स चि वं डै ॥ चो गु न व ट त अं न ग ॥
 अ थ स्थं न न ॥ मु मी इ स फ न जा य फ ल ॥ जा वं डी
 अ हि फे न ॥ वि ज या अ ज वा य न कु तै ॥ सा तौ थं
 न मै न ॥ ६३ ॥ उ प द ॥ स सि के सर डिं ग लो ग रां
 जा ति फ ल जां न त ॥ वि टां क अ हि फे न टं क टि
 इ म ग म द मां न त ॥ स क ल पी स इ क भै र सा थ
 वि न इ क उ व टा व त ॥ गुं ज हो इ पर वां न जां न
 व टी व ना व त ॥ आ नं द पी न पां न न स हि त व टी ए
 क न य त पु र स ॥ त ब ल ग म नो ज नु च त न ही
 व ल ग न यै न अं म र स ॥ ६४ ॥ सो र गा ॥ च उ र गुं ज
 इ फे न ॥ ए क टां क हरि व द न ॥ र है थ कि त कै मे
 ॥ ज्यौ वारि हरि उ सर द मै ॥ ६५ ॥ अ थ म
 क कां मे स्त वि धा ॥ दो ह रा ॥ अ न न

रवा॥ बरजअजमोदअनंद॥ हररबहरेआवरे॥
 स्वविहरीकंद॥ १५॥ धनीयामोयामोचरस॥
 गजपीपरअनिरांम॥ सेबरबारषजरफन॥
 लम्हसलीस्पांम॥ १६॥ मिरचकायफलगाषरु॥
 परपत्रजआंनि॥ धतुरासुवतालीसतज॥
 रक्तजांत॥ १७॥ सूकेबीजअनारके॥ जीरामेतअस
 त॥ चित्रानाडंगीसुनग॥ कौचबीजसेंतेता॥
 ॥ १८॥ मजुलेवीपंकजगटा॥ नवलसिंगोरेजांत॥
 ऊलथकाकडासिंगष्टा॥ नागकेसरीआंत॥ १९॥
 उहकरमूलसितावरी॥ उषधगुणतालीस॥ टांक
 रसबआंनिके॥ अतिसुषमकरिपीस॥ २०॥ जौ
 गचिरांजीजायफल॥ गीरीबुहाराजांत॥ दाषदा
 लचीनीनवल॥ असुएलाळकआंत॥ २१॥ इसफ
 दजावंत्रीललित॥ टांकरलेआउ॥ २२॥ सउषध
 पीसके॥ माराअनतरवाउ॥ २३॥ तीर्क्षपांचसेर
 गिडुग्धमंगावौ॥ निरजलनाजनमेउवटावौ॥ न
 गीआधसेरलेआवौ॥ वसनबांधपैमैठिका
 वौ॥ २४॥ चंद्रायणी॥ दधिसमांनजबद्धसुगाट
 निहारिये॥ बिजीयावसनसमेतनिकारसुम
 रिये॥ ओषधआसगंधआदिसुंआनिरलाइये
 ॥ फुनिहां॥ पावकमंदविचाररपकाइये॥ २५॥ उ
 हा॥ पयमैपयजबसोषिहे॥ वारुसमकुयजाय॥
 लोमआदिओषधसकल॥ तामहिदेकुरलाय
 ॥ २६॥ नुयपरधरौउतारिके॥ जबवहकबुकसि

राया॥ टंक जुगम सतवीसतब॥ दीजै बांमर लाय
 ॥ १६ ॥ फुनि विवेक करि कै सकल॥ मोदक जीय वि
 लास॥ नांम तास मोदक मदन॥ स्कंदर मधर स्फवास
 ॥ १७ ॥ धात करन अस बल धरन॥ याह के मन सज्ज
 नीरा॥ अनंग उपावन दुष हरन॥ त्रिय जावन रंति
 धीर॥ १८ ॥ इति मदन मोदक॥ अथ वंदगीता॥
 ॥ वृंताक पक स्फुल्लित महि द्वैटांक पीपर मारियै॥
 तिस लाय कै पंजो लज्ज परं मंद सवारियै॥ पावक
 मध पकाइ पीपर काटि बां हस कावडै॥ उषध सं
 खरण करि सुखरण बिन अंबर बांनई॥ फुनि अ
 धटां कर लाय मध सौं लिगलि पस कीजियै॥ नि
 ज मनहि अत अनंद उपजै॥ तरुण को सुख दीजि
 यो॥ १९ ॥ सोरगाइ वै न ज बल गनारा॥ त बल ग सुष
 पावै न ही॥ लीजो चतुर विचारा॥ रीत एक नर तरुण
 की॥ २० ॥ सहस्र गुड आन॥ पुंस सो फुनि नर स
 लावै॥ रतिकर कमल निजावै॥ २१ ॥ उहा॥ कंचन
 अर बिंब गुंजनरा॥ उर गल ता कै संगार बनष
 वावै रवन को॥ निसचै जवै अनंग॥ २२ ॥ कीट ले
 यजे सरद रिवा॥ वन मै तास निवास॥ अधिक
 कै न मुष तै तजै॥ तिन पर ता को वास॥ २३ ॥ फरै
 बिरो ली कै न मही॥ मारै कीट निकासि॥ बाल
 वेल संग दीजियै॥ इवै मदन जल नारि॥ २४ ॥ ब
 पै॥ पथ मकाम किनो ल बाल संग चिर जो कीजै

नारी श्रवति निहार के। उरषत्र वहित न का लो दोऊ ओ
 र अतिरुचि बटे। मुदित होय तिय बाल ॥ ११६ ॥
 ॥ मदन सदन को दलन काटि ऊस ताते। दीजे
 बिन ऊपर बिन हेठ चतुर अति चपल चला
 वत ॥ ऊपर हेठ चलाय बिन कनी तर पै गाव
 त ॥ जो तीन बार ऐसे जतन कवि अनंद का
 मी करत ॥ कामन मनौ जनि छे द्वै को कसा
 र दम उद्धरत ॥ ११५ ॥ ७६ ॥ जो कामी को मदन
 जल ॥ निकट न पड़ा मी होय ॥ तो तिय एक जत
 न करे ॥ जानै चतुर ज कोय ॥ ११६ ॥ सोरठा ॥ काम
 न अपणे पांछा सहरा वै प्रिय जंघ जुग ॥ जतन
 स्रष्ट हवि ध्यान ॥ हित प्रावै रवनी रवन को
 ॥ ११७ ॥ अष्ट स्थूलीकरण ॥ जो जन को रति नीव
 ॥ न हीट पतिता की तरुणि ॥ हित न होइ डुरु
 वीच ॥ करे स्रष्ट स्थूलीकरण ॥ ११८ ॥ गंगे रवाक
 निरमूलन ओ गयंद पीपली ॥ दण्डु सम आसंग
 ध आनीये वचान ली ॥ समानुचषनु आन के सु
 लिंग लेप की जिये ॥ वमो सना वसा जिहारि
 को आनंद दी जिये ॥ ११९ ॥ सहित ठरी राषंडु सबे
 सम आनीये ॥ अति सुषम करि पीस वसन महि
 बांतीये ॥ माल कंगुनी तेल एक सम बोनीये ॥
 मदनो ऊस गुरु होय लेप जो गानीये ॥ १२० ॥ ७७
 ॥ स्फुरत समै कामी रसक ॥ आनिरुधिर तम
 चोरा ॥ मदनो ऊस मरदन करे ॥ अति ही होय
 कंगेरा ॥ १२१ ॥ कनकरि पुचंबेली

पत्रवंतंसेलीजीये॥ मनसितअसुक्कवपय
ष एकत्रकरीजीये॥ सककरसमपीसतेजत
मेरलावै॥ अगनमैअवटायताकूठितठांननिठ
नावै॥ १२३॥ ॥ ओषदसाकलतेज
ठनायसुलीजीये॥ मदनंऊसकांमरदनकीजि
ये॥ अतिगरिष्टजोरवरकराईये॥ तरुनीसों
हिनमित्तकैमनहिमनाईये॥ १२४॥ बंदपधरी
॥ जोषाइजायफलसदांम॥ संकोचनहोइजु
मदनधांम॥ लौकामीपावैकुलास॥ मनुतिया
वरषदादसविलास॥ १२५॥ सवेया ॥ कुमुदरि
मवाचमंगायकैनामति तनलोहसौषमकरै॥ ठ
नपुरातनचीरकेसंयुततांवैकेनाजनवीचधरौ
॥ धरपावकुअपरताहिपकायकेअंबुजजौति
हृंगनरै॥ फिरलीजीयेअंबरसोंदकैसंबसु
ठांहेसुकाएतैकाजसरौ॥ १२६॥ चंडाइणाथोरौ
सोअंबरफारिविरंगहिधारीये॥ जोनीजैतिह
माहितताहिनिकारीये॥ संकोचनअतिहोय
तसंकाकीजिये॥ फुनिहांवाढेकेतिअनंद
महासुखलीजिये॥ १२७॥ मुक्तविर्यविधचौपई
बिनमैधातजातजिनहोशारतिरंचकप्रवै
जुसोश॥ सोकामीइऊओषधकरै॥ प्रवैनवेग
धातुनहिपरौ॥ १२८॥ चंडायणबंदा॥ मासोलोह
दसटांकसूवसमलीजिये॥ मिश्रीउनैप्रमा

एक वकी जिये ॥ दिन ६ की सवात जो जिन
६ है ॥ फुनिहां ॥ परे नवीय बिगधा उन हिजा यहै
॥ १२२ ॥ सोमरो गोपी प्रति करे सरति जो का
नी ॥ के चिंता बोह्या पेना मिनी ॥ ताते सोमरो
जो होइ ॥ निसचै वैद्य कहै सब कोइ ॥ १३० ॥ ६६ ॥
मदन सदन कै रति समै ॥ चले सरद बछवार ॥
रघन उरषतन ॥ नासुषपा वेनार ॥ १३१ ॥ चकार
फल कदली पर पकषां रुमध लाय कै ॥ नी जैरस
आंबेर सजल औ टाय कै ॥ घात सात दिं कामि
जो समया यहै ॥ फुनिहां ॥ रहै न कोऊ रोग महा क
षपा यहै ॥ १३२ ॥ फलषज्जर कदली समर सजां नी
ये ॥ ताते दना ताल मषां ता आं नी ये ॥ तीने पीस
दुष संग पीवै नां मिनी ॥ फुनिहां ॥ पावे पर मकुला
सऊ रोग न कां मिनी ॥ १३३ ॥ एला लघु पीपरी सी
त सिला जित आं नि ॥ फुनि पीस कां न के वरी कां
धौ टां क होइ प्रवां न ॥ पुनि प्रात समै तंडुल के ज
ल सों नित कर जो उवषाय ॥ अति सुष उपजे ज
हि दैष तां कहत आनंद उपाय ॥ १३४ ॥ ६७ ॥ कदली
दल की न सम कर ॥ तामे हर दर लाय ॥ फुनिरस
ल सों ले पीये ॥ हस्ति निरोग निहाय ॥ १३५ ॥ उडद
चूर्ण मकुला सहित ॥ सुद विनाई किंद ॥ गोपय में
पीवै तरुणि ॥ सुषपा वे आनंद ॥ १३६ ॥ कल्पविध
जो पई ॥ अरजुन बाल पिनासु आं ने ॥ त्रिफला स
हित रलाय वषां ने ॥ तिल के तेल मेल अवटावै ॥

करे स्नांमकचदिनप्रतिनावै॥१३॥ नोह्योरदा
 सौतमंगोवै॥ तिलकेतलमेतउवटावै॥ चिह्न
 नपरलावैजोकोय॥ कचकाजरजौसोनाहोय॥ १३॥
 ॥ अजाइधनगरासन्ननिजौ॥ सरसपातफुनि
 सरसघनिजौ॥ कचकावैकासीमैपीसा॥ अनि
 स्नांमकरेजुविसीसा॥ १३॥ जौचंपैकेफुनमंगवै
 ॥ बीजधनूराकौरसत्तावै॥ सजत्तपीसजौलावै
 केसा॥ चिह्नरहोइनवकजत्तवेसा॥ १४॥ रसनी
 ब्रंआवरेपिसावै॥ दिनइकवीसकेसपरलावै॥
 ताकेसरलहोयकचस्नांम॥ घनीवारत्रैचतअ
 निरांमा॥ १४॥ ॥ ६॥ वारनकेचिजवारके॥ मधु
 रतेनकेसंगा॥ कचकावैइकवीसदिना॥ वट्टेवा
 रबजअंगा॥ १४॥ वारनकेचिजवारके॥ माहिष
 पर्यकेसंगा॥ कचकावैइकवीसदिना॥ वट्टेवारव
 जअंगा॥ १४॥ इतिकल्पविध॥ अथलोमखा
 धन॥ वंजाईणा॥ पांचटांकहरतालटांकजौवार
 पोसतआनरलायटांकइकवारनै॥ चूनाजरसो
 पीसकेसपरलाइयै॥ फुनिहांवाइनकोककनांउ
 नकबहुपाइयै॥ १४॥ चोपई॥ चूनाअरुआने
 हरताल॥ टोऊपीसकांजीमैनाला॥ नावताचिह्न
 इरुऊयजाहि॥ कहुसदेहतौयामेनां॥ १४॥
 ॥ यमजस्तकोचूरनसावै॥ विमलतेलकटम
 धउवटावै॥ सातदिवसफुनिधामसकाइ॥ की

जतकेसकरऊयजाय॥१४६॥अथमरोमसबहुरकर
ऊपरतेनकरकौत्पावे॥कैऊचनेकौत्पावेनीरा
कबहीनउपजेबालसरीरा॥१४७॥कदलीरसकदली
रो॥वीसवारप्रलेपसकारे॥हरहोइकचसकनकी
कोककलारसनासुनिनीजे॥१४८॥ ॥
गोदधअरुपीसैहरतारा॥चुनाउन्हेकदलीर
रा॥करैनेपतीनजौनांम॥तहांनहोयवारकौधां
म॥१४९॥इतिरोमसाजनसंस्मरण॥चंद्रायण
सामसपीपरकोंगकवफुनिजानीयै॥आसग
खानकनेरबिऊनिजआनीयै॥कामनिकेतव
तमेनऊचनाईयै॥फुनिहां॥नारीहोइउरोज
महासुखपाईयै॥१५०॥हुहा॥घरिमफनकटते
नमहि॥ऊचनावैउवटाय॥उरजहोइआतिही
कवित॥दिऊश्रीफलनाय॥१५१॥कंवरागकर
चौपईवजबाबचीबालीअरुआप्रक॥मांषन
हरिदजांनकुनिनप्रक॥चौदसमाघपहअंधी
यारै॥पीवैपीसवैसचौबारै॥१५२॥मिरचऊनीज
नलेसमदोऊ॥वरषएकलौसाधेकोऊ॥मध
रअमलकबुषायनसाय॥पिकसमकंवजुत
कैहोय॥१५३॥हुहा॥सुंठीमुंठीविहरमी॥ववपीप
रअनिरांम॥सातरातमधसोन्नयै॥करैरुगंध
पगांन॥१५४॥उसएनिवारणचौपई॥हररसोत
आंवरेत्पावे॥समकरपीसअंबसोप्यावे॥सात

दिवस जौ पीवै कोइ ॥ ताके पुष्प निवारण होइ ॥
 ५५५ ॥ जौ के सके पात दि ॥ सम कर जौ पीवै उदि
 प्रात दि ॥ ताके पुष्प निवारण होइ ॥ निज नागर
 जानत सब कोइ ॥ ५५६ ॥ बांछ करण ॥ ॥ चीता
 और धातु सम त्यावै ॥ सम प्रवान जल मै अवटावै
 उष्ण वत वनिता जब वनिता होइ ॥ तीन दिवस
 लग पीवै सोइ ॥ ५५७ ॥ गज पीस ताको ले आवै
 ॥ फुनि सुकाय के तास पिसावै ॥ दिन ते चार ना
 र जोषा दि ॥ निस चै तरुण बांछ जय जाहि ॥ ५५८
 ॥ बालक दसन जे पहिले परै ॥ आदित वार सु
 कंचन जरे ॥ तरुण बांछ सो अनिवंध विप्रे
 त सु बांछ महा सुष पावै ॥ ५५९ ॥ विजय बंछ
 वर्ष तीन को अनिगुण ॥ दिन पतर इउ विजय
 निस घाय जौ टांक दसा ॥ नारि वांछि युवक
 ५६० ॥ अथ बांछ हरण जौ पईवे ॥ नर नरि
 राई ल्यावै ॥ सुवर के वर हिचउ रंग ॥
 सो मुख पर लाश ॥ बांछ हर करे ॥
 ल प्रस्त जौ मुख मले ॥ वदत कल ॥
 ॥ के बाही के आदही ॥ रक्त कट ॥
 अथ मुख कट करण ॥ चोइ ॥
 सुलोद पिसावै ॥ सात दि ॥
 मुख पर कटक नहि ॥
 व हो ॥ ५६१ ॥ सीधो ले ॥
 सो फुनि जब दि ॥

मुषविचित्रकृतकहरे॥१५॥मेवरकटुकअस
 हरदा॥अजाइद्वुनिआइ॥एपिसायजोमुषमिले
 एषोवैनिजताहा॥१५५॥उवटणा॥हरदगोषरुसुव
 नषा मोथासरस्यांजांन॥कासमीरकहरदक॥ट
 करसमआंन॥१५६॥टांकमारचंदनअरुण॥सम
 ऊसमनिहार॥तवलेचरांजीटांकदसा॥पीसौस
 कलसमासा॥१५७॥संबद्धरतकटुतेलमहि॥करे
 जुउवटनकोइ॥विमलरुपराजेतरुण॥कम
 लवदनमुषहोइ॥१५८॥पसनिवार॥अथममसाके
 काटिके॥परिरक्तनिकास॥चनासाजीपीसके
 निपकरेफुनितासा॥१५९॥अथमुषनिवासह
 रण॥चौपई॥सिववीरजअरुक्तवमंगावै॥
 मोथामहितेठीलेआवै॥धनीयाअरुइलाइची
 जांन॥जलसौंपीसमुषमिलआंन॥१६०॥नषजप
 तचंबेनीआंनै॥पत्रजुफुनइलाइचीजांनै॥उरी
 बांधपांतनमैषाइ॥ताकीमुषकवासतजजाइ॥
 १६१॥जोनऊवासहरनाचौपई॥मधरतेलमे
 नीबरलावै॥तरुनकिरनसौंतसकरावै॥जा
 कीजोनडुरगंधअतिहोइ॥तरुनीतेललगवै
 सोइ॥१६२॥काषकवासहरणचंद्राइणाबं
 दतबा॥नहुमजानीये॥इष्टहितगगहोसुचुना
 आंनये॥कामनिकेकासीकाषजोलाइये॥
 फुनिहा॥कोककलाइमकहैऊवासनसाइये
 १६३॥चौपई॥मोथाअरुइलाइचीजांनै॥नष

कचूरफुनिपत्रजअंनै॥सिरमहिमारिहायने
 का॥अतिस्ववासनिजतातेहोय॥१५॥दोहा
 समकेवराआदिदे॥तिवस्ववासतहो॥केव
 कजेवरलाइये॥इहजांततसबको॥१६॥
 इतिश्रीकोकमंजरीकविआनंदकृतविद्यविधा
 नंदसमाध्याय॥अथमोहनतिलक॥चंद्रायणा
 ॥स्वितआकजरक्वकिमोपाजानीये॥आलिजे
 निजमनसिनतिरजगंतीये॥पांचूपीसरूधि
 सूटीकाकीजिये॥द्विमतमोहैनारमहास्वामीजि
 ॥१७॥दोहापत्रजालुकमलजलु॥मकुलेवीव
 जांत॥कंपसौसबपीसकै॥तिलकनालपरवा
 ना॥१८॥चौपई॥कारीबरपीपरलेआवै॥मोटासं
 गीओरमंगवै॥अपनेअंगमेलकुनिलेह॥पांच
 पीसकरौजिमवेहा॥१९॥विजयबंद॥फुनिम
 भलिकै॥तामैकिजै॥टीकाकादै॥अतिहित
 ॥२०॥चौपई॥अबस्वहोइवियाजिहिमोहे
 कोकतचाहनिजोहो॥जाकौरवनप्रीतन
 धरईसोनारीइहटांनौकरई॥२१॥दोहर॥मो
 वंतजोनिरक्त॥काहैतिलकलितार॥जबटी
 बेदगन॥तबवसकुयनरतार॥२२॥अंजन
 चौपई॥तगरक्वतालीसमंगवै॥तबवातीला
 पीसलगावै॥सर लंदीपमहिनेला॥व
 ती वहतेला॥चायणावंगा॥आ
 नैत मनमषीपरी

रपारीयै रंचक न आदि मै न ज ब दी जीये । जौ मन न
 वे नार ताहि व स की जीये ॥ १८३ ॥ चूर्ण । मन स न चै
 सक मन द ह ॥ गोरोचन अनिरांम ॥ असि चंजन
 नैन निकरे ॥ निरष त मोहि नांम ॥ १८४ ॥
 ले ६ म ध प के प ष ॥ चाष अरु कूट न निजै ॥ तगर कंज को
 मूत का क जंघा फुनि निजै ॥ एव ट उष ध पी स ए रं न द ह
 म ध र षा वै ॥ र वि वा स र ज ब हो ६ व स न मृ सु का को ल्या वै ॥
 ए रं न प न चूर ण सहित व स न म ध निस चै ध रै ॥ जा ऊ प
 र मारे ज को ऊ ष ग ट प्रे म ता सो करै ॥ १८५ ॥ नु कां जन ॥
 षं जन नि पिंज रा मि मारे ॥ बर ष एक वा को प्रति पारै ॥ व ष
 म ध अ मै सौ दिन आ हि ॥ सा त प ष निक सै सिर ता हि ॥ १८६
 ॥ दिन द ह न आ वै सो द पि वा सी पिंज र म हि हो य ॥ नैन
 वि ज त ति हर दै ॥ ते से हा थ मे ल ति ह ग हो ॥ १८७ ॥ सा त प ष
 उ पा रि कर ॥ कं च न म ध मं टा ॥ को ऊ न दे षै ता स को
 मु ष मे ल ज हां जा ॥ १८८ ॥ अ स्त मं जारी आं न कै ॥ गो
 दृ त ता हि ष वा ॥ ति ह जौ मारे व म न क रि ॥ सी अं मृ
 त ले मा ॥ १८९ ॥ ली जै नु न क पा स तै ॥ जौ न यं व कर सो
 ६ ॥ का चै दी प क मे ध रै ॥ निज वा ती कर सो ६ ॥ १९० ॥ चं द
 ६ ॥ आ धी रैन अ मा व स नैन नि हारी ये ॥ अ हि वा त
 को धी उ दी प क म हि जारी ये ॥ मन ष षो प री ऊ पर का ज
 र की जी ये ॥ फु नि हां ॥ को ऊ न दे षै ता हि नैन ज ब दी
 जी ये ॥ १९१ ॥ चौ प ॥ क द म न क हूं तै ल्या वै ॥ कै
 के ल के फु ल मं गा वै ॥ नि ह चै ले न्य वै ॥ ते
 सब नी की गो र षा वै ॥ १९२ ॥

सहसवारसो आकृतद्विजे॥ सातउहपदिराके
साइ॥ जिहिदैसोअपनैवासिहोइ॥ १२३॥ अथ
मंत्र॥ ॐ काम्यसिंहं पुंलंगं प्रोक्त्वं मातृकालेयं
स्वाहा॥ ॥ धामुर्मा॥ ॥ केसिके प्रसूति
आवे॥ मनत्रिचतुषवारजपधवे॥ पढकरजो
जैजास॥ जौनिसचैतियवसकुवेतास॥ १२४॥
अथमंत्र॥ ॐ धामुमाप्रहिया॥ उनयवजतं नवा
वमोकां स्वाहा॥ पचनीवसकरतं॥ चउपई क
रकेसुकेसुसमगहि॥ वामपासधरपांन॥ मधकर
रपदमनितामजुवि॥ पदिइहमंत्रसुजांन॥ १२५॥
पदमनकोजबरीजीये॥ दिततुरतवसहोइ॥ लो
चंतवंतऊयश्रवणसुणि॥ मंत्रवससबकोइ॥
१२६॥ अथमंत्र॥ कामेस्वरमहियेउएंपमाक
स्वाहा॥ ॐ कामेस्वरपदिपद्मेमाकारविष्णुमहि
यस्वाहा॥ चित्रनीवसिकरण॥ मंत्रपईकदंती
कीजरकौरसेत्पावे॥ एकजायफलमेंनपिसावे
॥ फुनिस्फकायकरधरेनिरा॥ जबआवैकाम
सानिवारा॥ १२७॥ वाकोपीसपांनमहिराषे॥ वाके
वचनपांनमहिनाषे॥ होतहीकानदेइजवताहि॥
हितहीकरैपीतनिरवाहि॥ १२८॥ अथमंत्र॥ ॐ स्फने
गभाया॥ कामेवायनीस्वाहा॥ संघनीवासिकरण
होहातगरमूलेपीपत्तपटी॥ जबहीसंघनिषाई॥
जोअबकवसिअसमसति॥ तेसैवसऊयजाई
॥ १२९॥ मंत्र॥ ॐ महितातस्त्रीमिनीजहियमहउ

॥ हस्तनीवसकरनं ॥ चउपक्ष ॥ पंषपरेवाकीति
सहतरफुनिचउरपिसावे ॥ पढकरमंत्रतिल
नात्न ॥ निरषत्रियामोहेततकाल ॥ २० ॥ अ
पंच ॥ उँ धरिकामदेवायस्वाहा ॥ १७ ॥ मंछां
लावेचरन ॥ तरुनसुरतकेअंत ॥ जबलगज
जगतमै ॥ श्रीतवटावेकंत ॥ २० ॥ चउपक्ष ॥ सु
अंतलेअपनोवीरज ॥ लावेनांमवांमपगत
ज ॥ एमीमहिनावेजोनाहा ॥ तरुणीकरैश्री
रघाहा ॥ २० ॥ इतिकोकमंजरीकविआत
तनरयुवतीवसकरनं ॥ द्वादसमोअध
॥ अथजोनिचएनि ॥ स्नेहयमोएकजो
मनोमृदुवारिज ॥ एकनकीअतिसेयक
एकमकीकहुगोरसनासम ॥ एकनकीकहु
वगिरी ॥ एकनकीजलहीनविराजत
नकीनिसवैपनिहारी ॥ कोमलहोइनहोइ
तोइसूत्रीतमकोमरमोहतनारी ॥ २० ॥ हो
नारीएकविरंगमहि ॥ नासिकारूपसमान ॥ सु
आदिताकोमिलै ॥ कामीरसिकसुजांत ॥ २० ॥
रतिरुचिउपजेनाहकौं ॥ नारीमिलैजुकाइ ॥ र
चिवटायजोरतिकरौ ॥ तोरतिरुचिअतिहोइ
२० ॥ नारीएकवरंगमहि ॥ सबनारनकौंहोत
मदनांकुसकीसिषरसम ॥ तहांमनसिजको
ता ॥ २० ॥ जांमदनांकुसकीसिषा ॥ प्रगटपुरष
बिहा ॥ लोकाकेउतहितहे ॥ जानिगुप्ततिरनेद

॥२०॥ रगत परत जो जो नितै ॥ बीरज प्रवै जुना
हि ॥ जव लगनिस चै जो नियो ॥ गरन वधै नहिमां
॥२०॥ मदनोऊ सजा छुरष को ॥ तासौ लागत

॥ प्रवै जव गहिका मनी ॥ नाग तिही अऊ लाश
॥२०॥ मदनोऊ सजो जो नगै ॥ तासो वटै अनंग
धटै प्रपकं प्रको ॥ मिटै तरुनि डूषतंन ॥२१॥ म
नोऊ सजा छुरष को ॥ नागै तासो जाय ॥ चार जो
जोरति करै ॥ तारिन नैऊ अयाय ॥२१॥ पद मनी

निवर्णन ॥ अति वरतुलको मल विमल ॥ होइ
नता परवाल ॥ प्रवै जव मधुगंध सम ॥ पद्मनि
चित्रनिवाल ॥२२॥ संवनीयो निवर्णन सोरठा
ब्रजत होत बाल ॥ प्रवै छुरि - - गंध सम ॥ प्रवै
होउताल ॥ अतिऊ गंध सम निमदन ॥२३॥ ह
तनीयो निवर्णन ॥ कविन तिष्ठ परिबाल जल ॥

नगमहि छुरपीन ॥ प्रवै जव मधुगंध
॥ हसतनि अतिरसलीन ॥२४॥ प्रवै जव गति
रंज करि ॥ पदमनि चित्रनिवाल ॥ एक संवनि
अरु हसतनी ॥ प्रवै न होउताल ॥२५॥ इति
योदशम स्कंध ॥ अथ मदनोऊ सवर्णनां दुहा
मदनोऊ सजा छुरष को ॥ आगे होइ विसाल ॥

ठकवार अतिकोतनीहि ॥ प्रवै सरत उताल ॥
॥६॥ जाको सुमम अतिहिनयु ॥ नहि टपतै वा
हनार ॥ अति होइ विन चारण ॥ लीजे चतु

बार॥११॥ जाकौ स्फुल्लरक गोर बड्ड॥ नहि दीरघ न
 धु होइ॥ ता सम उत मा और नहि॥ जानत च
 ज कोइ॥११॥ मदन अंजु सकौ सिर स्फुल्लरा होइ
 स्फुल्लरत बार॥ इवै वेग नग पर सतै॥ टपत न पा
 मै नारि॥११२॥ इति चतुर्दश प्रबंध॥ अथ अं
 गवर्णन॥११३॥ काक जंग उर उर ज कटा॥ पंच
 गन घदान॥ अधर कपोल न बिंब सहित॥ तीना
 घं मन जां न॥११४॥ अधर कपोल न सी स उरा॥ उ
 ज पांच असनै न॥ सात अंग मरदन करछा॥
 न ऊ बड्ड वस्त्रि मेन॥११५॥ इति पंचदश प्रबंध॥
 उत पतिकाम कलोल के॥ स्निग्ध रसिक सब को
 ए विलास त बहीवतै॥ त्रिय विचित्र जव होय॥११६॥
 होय रतिक जे संग निस॥ सुनौ चाहि स
 मुखे॥ जो बढि करै तौ बल द्यष्टे॥ इत्य विन त्रिय
 हि स्फुल्लरा॥११७॥ काक जंघ उर उर ज कंठि॥ पं
 च अंग ना घदान॥ अधर कपोल कुच सी
 रा॥ एवं विन सहि चान॥११८॥ मलय लसु मुख
 ल परि॥ और हे व के होव॥ एषं मन जां नै च ऊर
 नै कन जां नै गोव॥११९॥ सेम बर एन॥ विमल
 और परम ल विमल॥ विमल ऊ सम स्फुल्ल वास॥ ऊ
 सम विमल कादंबरी॥ विमल सेज की वास॥१२०॥
 पांत ल वंग दूला रची॥ जाति फल घन सार॥ जाव
 त्री संग मे लि कै॥ इति विध सेम संवारि॥१२१॥ नाग

बाधकरकृदिसिद्धे उक्तज्जन्तुनि सति करज्जन्तु
 ज्ञेयस्य काकसप्तमज्जन्तु
 रपरमन्वसततनयः असुपरमन्ववृत्त्यायाः बदन
 पोतं राजतच्छधरासिजहि वैवेऽयायाः २२८ तव
 प्रनिगजगामनी ॥ नवसतसाजिष्टगारगवासु
 वैवहिऽयायके ॥ रूपअपार ॥ २२९ ॥ मंगलावेद
 अतिविमलवैररुक्वा सती विमलसंविना
 ऊहदुस्पचेन चारुपरमन्व धरे पातमंगा
 सातहृष्टगारसंवारिस्कंदरगवनस्तनगम
 रान ॥ वैवेस्मनमुषआयससिमुषरूपपर
 परसान् ॥ २३० ॥ अद्यआलंगुता ॥ रीगनेकेया
 सप्तसुर ॥ त्योआलिगनिपाचे ॥ आसनकेसि
 रताजहृ ॥ आलिगनरतिराचा ॥ २३१ ॥ तस्य
 कंधकरिवामधरिगवेवावातिपतिगदा पात
 षवावतिधीतकरिगआलिगनआमोदग ॥ २३२ ॥
 सुदितआलिगनातरुणिजंघपातिनेधमहि
 मदपावतपियजास ॥ २३३ ॥ आलिगनमुदतकृति
 उपजतपरमज्जनास ॥ २३४ ॥ सिमआलिगन ॥ प
 कटिलीने एकपग ॥ हितियजंघपरजाना ॥ पिय
 परमन्ववाहिजुउर ॥ सिमआलिगनमोना ॥ २३५ ॥
 धानिसंगलिगन ॥ पतिकटिलपट्टे विविचरना
 नरेपरसपरअंका ॥ उरजगहस्तुंबनबदन ॥
 नामआनंदनिअंका ॥ २३६ ॥ रुचिआलिगनीपति
 वैवैपतिजंघपरा ॥ नामकंधकरवामा ॥ मुक्तव
 सननियमीकरौ ॥ आलिगनसविनाम ॥ २३७ ॥

प्रथमचउरजो कामिनी॥ पतिको आसन दित
 अति अनंद मन उपजे॥ बड़े विवितन हेता॥ २३॥
 जोगा सवा॥ तिय पोढ के पा लषा मे ऊपरै॥
 जग जंघ डकु कर आधुरै॥ पति बैव नु जागहि
 के ल करै॥ कवि आसन जोग विचार करै॥ २३८॥
 आसन॥ नु ज ऊपर नांम के पा उधरै॥ पिय बैव
 नु जागहि के ल करै॥ रति नांम कह्यै इहि आसन
 को॥ रति पीत विनोद विकासन को॥ २३९॥ मदनो
 दित आसन॥ कटि ऊपर नारिके पा उधरै॥ पिय
 बैव गहै कच के ल करै॥ मदनो दित आसन नांम
 य है॥ रति होत विना स अनंद कह्यै॥ २४०॥ इहा स
 न चंदा रणा॥ काम निके कटनी दल दोऊ नु ज धारि
 कै॥ कामी करै किलो ल अग्र बैवारिकै॥ गहै परस
 पर अंक कांम सुख सुख मानइ॥ फुनि हां॥ इंदना
 म इह आसन जांन सुजांनइ॥ २४१॥ लाल आसन
 सुंदर के पग लेइ डकु करि धारिकै॥ पिय पावे आ
 नंद अग्र बैवारिकै॥ गहै परस पर अंक करै रति कां
 मिनी॥ फुनि हां॥ लाल स आसन नांम ल है सुख न
 मिनी॥ २४२॥ विपरीत आ॥ पिउ पसारिकै हेव परै॥
 चढि ना मिनी काम किलो ल करै॥ विपरीत हिना
 म नु आसन को॥ मदनो दित कांम विनासन को॥
 २४३॥ अदुन आ॥ पिय पोढ के नारि उरो जग है॥ तरु
 गी पति ऊपर बैव रहै॥ कामनी काम किलो ल करै॥

कविआसनअंबुजनामधरो॥२४॥रतिपामआस
 नचंद्राङ्गा॥कामीकरपटकामत्रियाकीजंघमे॥का
 मणिकेदोऊपाउरुक्तनिंतवमे॥सिऊगहिदोऊ
 पाउकरैरतिमोषता॥२५॥हितासनचौपई॥कामनि
 पोढेपाउपसारि॥पीउपगउलटगहेनिजनारा॥कंत
 गहेकामनिकेपाय॥हितआसनवरनैगुनराया॥२६॥
 मृगासन॥वनितापसुकीसमझयरहो॥पिय
 ऊपरपांनउरोजगहो॥खिमुषतिबुवनकेलकरै॥
 मृगआसनरूपअनुपधरो॥२७॥परस्परआस
 न॥आरुचरणपाठेकरहै॥उदरचरणपरसपर
 गहो॥दपतिकेनकरैअनिराम॥आसनजानपरस
 परनामा॥२८॥मृणालआसन॥यनलागरहेनि
 जकामनियारो॥कामनिगहेआनिगनगाडो॥नि
 यनचायपियकेनुंमगहोकरैभूषण॥आसनरुद्र
 केहो॥२९॥तमालआसन॥दिहा॥पि
 टिगहै॥नियेअंकनीबाल॥कामीकामनिजंघ॥
 आसनयहीतमाला॥३०॥सुषपलवआपि
 जंघउनैपकरै॥करउन्नतकंतकेसीसधरै॥
 बितगहेऊचकिनवै॥रुमपधव
 ॥३१॥महाबलआसन॥नामानिकेदोऊपा
 जुगधारिके॥कामीकरैकिलालरुपाउपसारि
 पायनकोअतिहीबलनिहवैआनीयै॥न॥

आसन ऐसे जानाये ॥२५३॥ स्फुरति आस
यके चरण कंठ पर धारै ॥ कटि कर गृह की डानि
सुरत अंत आसन को नाम ॥ याही तै प्रावै त्रिय
॥२५४॥ एषोडस आसन करि आवै ॥ तब कामनि
मथ्य दवावै ॥ जतन जु करहि एह वर नारि ॥ फुति
ले ॥ उन्ने करवारा ॥२५५॥ होहरा ॥ पिय धोवै तातें
क ॥ तरुणी सीतल तोय ॥ द्रुत द्रुत कोट डहीर
बहु संकोचन होय ॥२५६॥ नगन जु सोवै नारि सं
घटै जु अंग मनोज ॥ जो वसत न संग पोटी वा
मन मथ्य चोज ॥२५७॥ इति स्फुरति आसन ॥ रहे रैन
दिइ घटि ॥ तिमर होइ कुमुद ॥ सावत ही आस
करै ॥ आरि साहित आनंद ॥२५८॥ अथ उदित आ
तरुनी कोटै पीठ ॥ पिय पोठै रतिथान ॥ कटि ऊ
कामनिके गहै ॥ उदित स आसन नाम ॥२५९॥ र
कोच आसन तरुणी सेरुपाइ पसारि परै ॥ पिय त
परवै ठ किलो ल करै ॥ जुग पीन पयो धर पांन गहै ॥
इह नाम अनंद संकोच कहै ॥२६०॥ सिधु ल आ
न ॥ तिय दक्षल पाव पसारि परै ॥ इस रौ पग पि
के कंध धरै ॥ पति पांन गहै ऊच के लमचै ॥ सि
पलासन सुअनंद रचै ॥२६१॥ गिहुक आसन ॥
॥ जानिक बह ॥ तरुणि वरण धरनु जनि पर सपर
कन रिजे ॥ उपवरहन तिय हेव मुख करि केल करि
॥ कामनि उपर कंत सक्रीडा कीजिये ॥ गिहुक आ

सन अतं दश वन सुनि लीजिये ॥ २६२ ॥ एपा चौ आस
 न करै ॥ तब जौ वै विबिकां मांश मर सुख ऊपजै ॥ रति
 हित मो नै नां ॥ २६३ ॥ ठं ६५ धरी ॥ आ मो दे सु दिते
 उनि प्रेम जांन ॥ निसंग सँ चहि आनंद वषांन ॥
 आनिंगन पांच ऊ सुरतरष ॥ आनंद विबिर संप्र
 म चष ॥ २६४ ॥ ठपय ॥ प्रथम जोग रति जांन बज्र रि
 म दनो दिते मांनो ॥ जानि ई ई ला ले स सुषट विपै
 न वषांनो ॥ फुनि पाछे अंबु ऊ अघर रति पोषत कि
 ऊ ॥ हित आस नै हंग और पर सँ पर ॥ जीय धरि जे ॥
 जो नित मो ले म नै ल ॥ जाति सुष पल व सु प्र हौ बिल हि ॥
 सर ते अंत आसन कहिय एषो ड स आसन न ल हि ॥
 ॥ २६५ ॥ ठिछा ॥ अपार सि उ दित संकोच कहि ॥ सिध
 ल नु गि ड क जांन ॥ पांच ऊ आस न दितिय रति ॥ ज
 न ऊ नै द सु जांन ॥ २६६ ॥ एषो म स ए पंच क हि ॥ न ए
 सकल इक वी स सुखि ली ला वन सुष करन ॥ जावनि
 रति को ई स ॥ २६७ ॥ चौ रा सी आसन सकल ॥ कहै को क
 सुष कं ॥ तामहि ते सब अतिक विन ॥ कहियै क
 अतं ॥ २६८ ॥ सोरठा ॥ ए आसन इक वी स ॥ हरष
 उपावन डष हरन ॥ जावनि रति को ई स ॥ किल करन
 को अति सुगमा ॥ २६९ ॥ पद मनी आसन लघु
 चो प ॥ मदनो दित सकुच कहिय नां ॥ मानै सुष
 पद मनी बाल ॥ तीन विसै सै सै सामांन ॥ कहिय
 नंद एह जिय जांन ॥ २७० ॥ चिदणी आ

नोदितअंबुजआरस॥फुनिमृणालविपरी...
लालस॥एषटचित्रणिसुषदायक॥जानैचउ
कोकरसनायक॥२६०॥संघनीचित्रणीआसन॥
७६॥संघनिगिंडुकजोगरति॥होइस्फुटत्रिवषा
न॥स्फुरतअंतरितहस्तिनी॥प्रगटमहाबलजान
॥२६१॥

॥त्रियकरतविपरीतरति॥

अस्थितनुबतजान॥रचैजुआसनकोकमहि॥
बनिजदारणवान॥२६२॥

॥मृगआसन

आरसअवरा॥उरजआसनजान॥त्रिजगआस
नतीवहो॥कहैसुकोकवषान॥२६३॥रतिआसन

अउपरी॥मदनोदितअरुजोगवषान॥गिंडुकोसि
यलमहाबलजान॥स्फुपध्ववरतिसंकोच॥नव

रतिजानआनिजियलोच॥२६४॥विपरीतआस
न॥७६॥हितअंबुजरतिपोषता॥अरुविपरी

तअनंदा॥एआरांविपरीतरति॥कहैकोकस्फु
कंद॥२६५॥अस्थितांविध॥अस्थितइंद्रपरस

परहि॥लालसकरिजियजानि॥एकतमाल
मृणाललहि॥विकुअस्थितप्रयवान॥२६६॥ना

रीआसन॥अंबुजरितपोषेतविपरीत॥लालस
हितजीयधरिप्रीत॥आसनपंचतरुणिहितकर

कोकरीतइहविधउचरै॥२६७॥दंपतिरुषआस
न॥आसनजासपरसपरनाम॥ताकोकरतपुरुष

अरुनाम॥सिषपंचदसआसनरहै॥त्रियाउर

धकरनको कहै॥२७॥ सुनऊरसिकजनअवणस
 नि॥ कोकीरतसुधरास॥ चादतचउरसरोचकै॥
 करतमूढअतिहास॥२८॥ लेदधरी॥ ॥ ॥ ॥
 पथमअमरावतिकृतैकोका॥ नहिजानतकोऊ
 मृतलोक॥ इककुतिचाहसाहीमनिसा॥ तिहप्रग
 टकीथोकीडाविससा॥२९॥ तापाबैजौकविअसि
 पा॥ तिहस्याकायकरिरविसष॥ कामहिबद्धीप
 असपंचवान॥ पुनिरतिरहससांनैसुजा॥ ॥ ॥ ॥
 उरमंदनसिवाद्यादिअना॥ आरसिचंजनस
 मरतिरंगा॥ पढसकलकवीकरिरविचार॥ वरनै
 अनंदकविकोकसार॥३०॥ दुहा॥ सरगकिप
 सोरहसरसा॥ रचनुवहुविषवद॥ पढतरतिरंग
 नवा॥ विवितहितआनंद॥३१॥ इति श्रीकोक
 मंथरीकविअनंदकृतसुखदसपंधसमाप्त॥
 संवतर१८७५रजेष्टवदिह वासरसिषत
 सि॥ बुद्धमन्तरायपुरमअ॥ श्री॥ ॥ श्री॥ ॥ श्री॥
 ॥ विनालपचीसी॥ दुहा॥ पाबैजोवैपैमैचलती
 इहोहैसेरीनीसरती॥ जेमवचनकहिउरपहसा
 वै॥ औरविनालकहढालवजवै॥१॥ पुरयध
 कावैपैमैचलती॥ फेनौगदिराधेमदमती॥ चौ
 हदेऊनीपानमंगवै॥ ओ॥ २॥ ॥ ॥

रहेसिणगारी॥ जावहिपरिघरिगतअंधारी॥
 पांतहीपहिरदयाईआवे॥ ओ॥३॥ हासीक
 रेबैतचौबारे॥ थाटीदेखैऊपरवादे॥ काकरी
 मारसंकेतजणावे॥ ओ॥४॥ विररऊचषांच
 बांधे॥ कांमीदेषमयणसरसांधे॥ शरषदेधीने
 नयणतचावे॥ ओ॥५॥ आपकरतऊचम
 रदननारी॥ षांचैचीरनिसासाफारी॥ बांकेनय
 णांतयणमिलावे॥ ओ॥६॥ जानबुझमिसनि
 तकीबोलै॥ सरमबातसबहीसोबोलै॥ वाटे
 रषांपांतचवावे॥ ओ॥७॥ कंदोइनधोबत
 कनारी॥ नायनबीपनऔरफनारी॥ विरर
 उनकैघरिजावे॥ ओ॥८॥ झुठहिझुठउर
 नदेती॥ घरि२फिरि२उदंगतिलेती॥ सन
 मुषदेधीकाषवजावे॥ ओ॥९॥ बडुतरहेमा
 ताकेजाघर॥ असुतियजातडुवुहरेबाहिर॥
 जुवादेषकैषेलमचावे॥ ओ॥१०॥ दिषि२नैकरै
 षंधारा॥ दिषलावैसबअंगउधारा॥ गहिरसब
 दकहिपायलठमकावे॥ ओ॥११॥ पुरषांविच
 जायषलेसारी॥ दातांकरिफेडैसोपारी॥ षल
 वेरीसोहेतेहवधावे॥ ओ॥१२॥ हसि२मीठाव
 तांबोलै॥ विर२बाजारहिकोलै॥ जातांपुरषांनै

वतलावै॥ औ॥ १३ ॥ मारगचलतीपावैरै॥ पु
 हमचकोडीचैडैफिरै॥ बाहुचीकरकाषटि
 पावै॥ औ॥ १४ ॥ पहिरफुलेनसमारपाटी॥ ग
 धैसीसुहृपकीआटी॥ दिनकीदांतकबाडि
 दिरावै॥ औ॥ १५ ॥ राजपंथनीकनतीबान
 ॥ तरुणपुरखसुदैतीतान॥ नंगरासेतीतान
 जावै॥ औ॥ १६ ॥ तरुणदिसकैकाषजन
 वै॥ मोडअंगबहुअनसआवै॥ पहिरणटी
 लोकसिद्धिजावै॥ औ॥ १७ ॥ छिडकीषाटन
 गाईसोवै॥ परधरबैनीपतिहिविगोवै॥ पजो
 सीबहुतजगावै॥ औ॥ १८ ॥ आपहीअध
 रसणसुवांपै॥ वाररसुमअचरमापै॥ धका
 भूवतेअधिकसहवै॥ औ॥ १९ ॥ जाटक
 सजविडाई॥ दीवाधरीयाबार॥ औरकहा
 कऊयकहै॥ आऊवैविमुहमार॥ २० ॥ पावै
 जोवैमुहसे॥ बोलावैदिगाल॥ वमकैरपग
 ठवै॥ तोसाचीबितान॥ २१ ॥ नीलधुजावैपै
 मैबनती॥ उरहोपरहोवैकादिसजोती॥ आधे
 पाथैचीरकावै॥ औ॥ २२ ॥ नीचोतोवैवा
 लुकावै॥ धितगरकरजिहरवजावै॥ औ॥
 २३ ॥ पगटेकरीबितानपचीसी॥ बकु

हे प्रगल्भ चीसी ॥ उन्नै जनक निज लाजगमवि
॥ औ० ॥ २४ ॥ कवत्त ॥ इह दित सेरी फिर पीवै ॥
गिदित है उसास नास हाथ लाइगा लकै ॥ नि
त जाइ पाँन क सुलावत बाजार नमै हांसी करै
नरता सुक हरहु ला सकै ॥ त्रिगन के सरसंधै
कांमी द्ये इरन सुनहु क नचाय कै दिषाय ज
त ना लकै ॥ छे लन के कनां पाँन वस्तु के बिन
यलेत कहै नै मल बन है बिना लकै ॥ २५ ॥ इति ॥

